हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5118 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2073 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
वर्तमान शिक्षा पद्धति में गुरू, शिष्य की बदलती अवधारणा	5
'पशुधन' नहीं, 'धनपशु' हैं आवारा	7
भगिनी निवेदिता सेवा न्यास द्वारा किया गया सेवा कार्य	10
गरीबों को श्री गणेश जी महाराज से ज्यादा रिद्धि-सिद्धि चाहिए	11
अब सिंध प्रांत ने भी मांगी पाक से आजादी	11
विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस पर भारत माता मंदिर में किया राष्ट्ररक्षा यज्ञ	12
एमनेस्टी इंटरनेशनल और दिग्विजय सिंह, प्रसंग जम्मू कश्मीर को लेकर एक नई बहस का	14
आनंद मंत्रालय की चुनौतियां	17
पाक में हिन्दुओं की दुर्दशा के लिए कौन उत्तरदायी?	18
जात न पूछो साधु की	19
समय के साथ कदमताल करता संघ	21
दिल्ली की प्रमुख सड़कों पर पढ़ा जायेगा महाचालीसा	23
हिंदवी स्वराज्य संकल्प	23
डॉ स्वामी मुकुन्ददास जी महाकोशल प्रांत के संयोजक बने	24
सनातन संस्कृति की पर्याय-श्रीकृष्ण-जन्मभूमि	25
मानसिक पतन	26

अथदशमोऽध्यायः

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

मैं अदिति के 12 पुत्रों में वामन रूप धारी विष्णु और ज्योतियों में किरणों वाला सूर्य हूँ। मैं 49 वायुदेवताओं में मरीचि नामक वायुदेवता और नक्षत्रों में नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ।

बारह पुत्र अदिति के जो हैं-सब आदित्य कहे जाते हैं उनमें सबसे श्रेष्ठ विष्णु मैं-वही विष्णु अथवा वामन मैं सभी पदार्थ ज्योति है जिनमें-किरण युक्त सूरज मैं उनमें दिति बालक उन्चास मरुत का-मै तेजस रक्षक उन सबका किया इन्द्र ने भ्रूण विखण्डित-रहे मरुद्गण फिर भी जीवित सत्ताइस नक्षत्र जो नभ में-उनका अधिपति शशि मैं उनमें

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥२२॥

मैं वेदों में सामवेद हूँ। देवताओं में इन्द्र हूँ। इन्द्रियों में मन हूँ और प्राणियों की चेतना अर्थात् जीवन-शक्ति हूँ।

दोहा

वेदों में मैं साम हूँ, मधुर स्वर सहित गान ।
जिसमें वर्णित ऋचायें, मम वंदना प्रधान ।।
मैं ही मन सब इन्द्रियों, में प्रधान हे भद्र ।
जीवों में मैं चेतना, देवों में मैं इन्द्र ।।

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली-110035

आश्विन कृष्ण पक्ष विक्रम संवत् २०७३
१६ सितम्बर से ३० सितम्बर २०१६ ई. तक

सूर्य दक्षिणायन — वर्षा ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
शुक्रवार	पूर्णिमा	शतभिषा/पूर्वाभाद्रपद	१	16	संक्रान्ति, पूर्णिमा श्राद्ध, श्री सत्यनारायण व्रत
शनिवार	प्रतिपदा	उत्तरा भाद्रपद	२	17	विश्व कर्मा पूजन, प्रतिपदा श्राद्ध
रविवार	द्वितीया	रेवती	३	18	पंचक समाप्त, 24-55, द्वितीया श्राद्ध
सोमवार	तृतीया	अश्विनी	४	19	गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध
मंगलवार	चतुर्थी	भरणी	५	20	चतुर्थी व पञ्चमी श्राद्ध
बुधवार	पञ्चमी	कृतिका	६	21	षष्ठी श्राद्ध
गुरुवार	षष्ठी	रोहिणी	७	22	सप्तमी श्राद्ध
गुरुवार	सप्तमी	00	००	00	क्षय
शुक्रवार	अष्टमी	मृगशिरा	८	23	जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी श्राद्ध
शनिवार	नवमी	आर्द्रा	९	24	मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध
रविवार	दशमी	पुनर्वसु	१०	25	दशमी श्राद्ध
सोमवार	एकादशी	पुष्य	११	26	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध
मंगलवार	द्वादशी	श्लेषा	१२	27	संन्यासी एवं द्वादशी श्राद्ध
बुधवार	त्रयोदशी	मघा	१३	28	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वा फाल्गुनी	१४	29	मास शिवरात्रि, विष शस्त्र आदि से मृत का श्राद्ध
शुक्रवार	अमावस्या	उत्तरा फाल्गुनी	१५	30	पितृ विसर्जन, स्नानदानादि अमावस्या

श्री अष्टावक्र गीता (जनक उवाच)

समाध्यासदि विक्षिप्तौ व्यवहारः समाधये ।
एवं विलोक्य नियममेवमेवाहमास्थितः ॥३॥ १२

"सम्यक् अध्यास करके विक्षेप होने पर, समाधि के लिए व्यवहार होता है। इस नियम को देख कर मैं ऐसे ही (समाधिरत) स्थित हूँ।"

हेयोपादेयविरहादेवं हर्ष-विषादयोः ।
अभावादद्य हे ब्रह्मन्नेवमेवाहमास्थितः ॥४॥ १२

"हे ब्रह्मन्। हेय और उपादेय (त्याज्य और ग्राह्य) भावों के वियोग से, तथा ऐसे ही हर्ष और विषाद के अभाव से अब मैं ऐसे ही स्थित हूँ।"

वर्तमान शिक्षा पद्धति में गुरू, शिष्य की बदलती अवधारणा

-विनोद बब्बर

महान दार्शनिक, भारतीयता के पुजारी, पूर्व राष्ट्रपति, स्वर्गीय सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जिनके जन्मदिवस 5 सितम्बर को सारे देश में 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है, की मान्यता थी कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग संभव है। वे गर्व से कहा करते थे 'मैं पहले अध्यापक एवं फिर राष्ट्रपति हूँ'। आज जब शिक्षा की गुणात्मकता में नैतिकता का कोई स्थान न छोड़ने पर जोर है, गुरु-शिष्य संबंधों की पवित्रता को ग्रहण लग रहा है। ऐसे में डॉ. राधाकृष्णन का पुण्य स्मरण एक नई चेतना पैदा करता है।

इस बात से शायद ही कोई असहमत हो कि जीवन के सर्वाधिक आनंद भरे क्षण हमारा बचपन है, विशेष रुप से विद्यालय जीवन में बिताया हुआ हर क्षण अविस्मरणीय होता है। यही वह काल है जब हमारे भविष्य की इमारत की नींव की ईटों को सुव्यवस्थित ढंग से रखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति में गुरू का स्थान सदा से सर्वोपरि ही रहा है। बदलते परिवेश में गुरु का दायरा व्यापक होता गया। प्राचीन काल में शिष्य गुरु के आश्रम में रहकर ज्ञानार्जन करते और जीवन में शिक्षा एवं ज्ञानार्जन के साथ श्रम की महत्ता को समझकर युवा होकर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते थे। गुरु संदीपन के आश्रम में रहकर बाल कृष्ण योगीराज श्रीकृष्ण बने। गुरु विश्वामित्र के आश्रम में रहकर राजकुमार राम मर्यादा पुरुषोत्तम धनुर्धारी राम बने।

आज 'शिक्षक' गुरु या आचार्य कहने को पर्यायवाची शब्द है। हम शिक्षक को राष्ट्रनिर्माता घोषित करते हैं क्योंकि हमारा विश्वास है कि वर्तमान के फिसलन भरे दौर में केवल शिक्षक ही अपनी सच्ची निष्ठा, योग्यता और क्षमता से देश के भविष्य का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि एक शिक्षक संकल्पित हो तो अपने शिष्यों का सर्वांगीण विकास करते हुए अपने छात्रों में जीवन मूल्यों के संस्कार रोपित कर उन्हें राष्ट्रभक्त नागरिक बना सकता है। कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि एक साधारण शिक्षक से हम बहुत अधिक अपेक्षाएं लगाये बैठे है। ऐसा करते हुए हम यह भूल भी जाते हैं कि वर्तमान शिक्षा पद्धति जहाँ एक ओर शिक्षक पर अनेक प्रतिबंध लगाती है वहीं दूसरी ओर छात्रों में राष्ट्र-प्रेम की भावना एवं मानव मूल्य उत्पन्न करने में असमर्थ है। उसका सर्व-धर्म समभाव से भी कोई लेना देना नहीं है क्योंकि पाठ्यक्रमों का निर्माण मनमाने ढ़ंग से किया गया। विदेशी शासकों के बाद भी हमारे अपनों ने हमें हीनभावना से ग्रसित रखने में अपने हित तलाशे। आज शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बेहतर इंसान बनाना नहीं, कमाऊ पूत हो तो वहाँ इससे ज्यादा आशा की भी जाए तो कैसे?

व्यावसायिकता के वर्तमान दौर में गुरू का वास्तविक अर्थ ही बदल गया है। सामाजिक, अध्यात्मिक मंच से लेकर शिक्षण संस्थाओं तक क्षेत्र में फैली आज अर्थ की प्रधानता ज्ञान से सर्वोपरि हो चली है। ज्ञान बांटने के नाम पर अधिक से अधिक अर्थ उपार्जन की उपजी मानसिकता ने गुरू के स्वरूप एवं कार्य को स्वार्थमंडित कर डाला है जिससे गुरू का वास्तविक स्वरूप ही बदला नजर आने लगा है। इसके बदलते विभिन्न स्वरूप एवं पड़ते प्रतिकूल प्रभाव को साफ-साफ देखा जा सकता है। क्या यह सत्य नहीं कि आज शिक्षक के जो दो रूप हमारे सामने है उनमें एक सरकारी कर्मचारी है जिसे पढ़ाने से ज्यादा दूसरे कार्यों में व्यस्त रखा जाता है। सरकारी स्कूलों में दाल-दलिया बांटने से वोट बनाने, जांचने, डलवाने, गिनती करने से जनगणना और न जाने कौन-कौन से कार्यों से घोषित अघोषित कार्य जिसके जिम्मे हो उसे गुरु (शिक्षक) कहे भी तो कैसे?

'गुरु' शब्द की पड़ताल की जाए तो हम देखते है कि इस शब्द में जो गुरुता है वह 'टीचर' में नहीं है। यह अंतर दो भाषाओं के गहरे सांस्कृतिक अंतर के कारण ही है। गुरु श्रद्धा का प्रतीक है लेकिन टीचर शिक्षा उद्योग के एक वेतनभोगी कर्मी है। गुरु के प्रति श्रद्धा जीवन पर्यन्त रहती है। उसके ऋण से हम उऋण नहीं हो सकते। दूसरी ओर टीचर तो मात्र अपनी सेवाएं देने वाला (सर्विस

प्रोवाइडर) है। हमने फीस दी, उसने सेवा दी, बात खत्म। हिसाब बराबर। ठीक उसी प्रकार से जैसे बस या रेल में किराया देकर यात्रा की। यात्रा संपन्न होते ही उस बस या रेल अथवा उसके चालक, संवाहक से हमारा कोई संबंध शेष नहीं रहता।

अब दूसरी श्रेणी में हैं सजे-धजे प्राईवेट स्कूलों में कार्यरत शिक्षक। वे किसी भी दृष्टि में गुरु नहीं कहे जा सकते क्योंकि महंगे निजी स्कूल गुरु-शिष्य परम्परा नहीं 'सर्विस प्रोवाइडर और क्लाइंट' के पोषक हैं। स्पष्ट है कि प्राचीन काल के गुरूकुल एवं वर्तमान के शिक्षण संस्थानों के परिवेश पर तुलनात्मक दृष्टिपात करने पर काफी अन्तर दिखाई देगा जबकि वास्तविक वैचारिक धरातल पर दोनों का मूल अर्थ एवं उद्देश्य एक ही रहा है। गुरूकुल में गुरू एवं शिष्यों के बीच जो संबंध स्थापित रहा है, वर्तमान के शिक्षण व्यवस्था में वह टूट-टूट कर चकनाचूर होता दिखाई दे रहा है। आज शिक्षण संस्थान व्यावसायिक संस्थान बनकर रह गये हैं, जहां ज्ञान अर्थ के साथ जुड़कर अर्थहीन हो चला है। इस परिवेश ने शिक्षकों की परिभाषा एवं स्वरूप को ही बदल दिया है। ऐसे में हम लाख गाते रहें- 'गुरु कुम्हार शिष कुंभ है' या 'सब धरती कागद करु.... गुरु गुण लिखा न जाय' पर सत्य यह है कि शिक्षा के मामले में हमने सर्वाधिक अनपढ़ता दिखाई है। पाठ्यक्रम बनाने से उसे लागू करने तक अनेक छेद है। सर्वाधिक आश्चर्यजनक है शिक्षा को नैतिक शिक्षा से रहित करना। जिन्हें 'नैतिकता' की सुगंध 'साम्प्रदायिकता' की दुर्गन्ध से भी ज्यादा खतरनाक लगती हो वे शिक्षक का अर्थ जानते भी है या नहीं इस पर सवाल उठना चाहिए। बेशक आज शिष्यों से दुर्व्यवहार, यौनशोषण अथवा शिष्यों द्वारा अध्यापकों के अपमान के किस्से चटखारे लेकर सुने-सुनाए जाते हैं। अध्यापक पर कक्षा की बजाय ट्यूशन में ही पढ़ाने के आरोप है लेकिन यह अर्धसत्य है क्योंकि बहुसंख्यक अध्यापक आज भी अनवरत श्रम कर अपने शिष्यों के भविष्य को सुदृढ़ आधार देने में लगे हैं। बहुसंख्यक शिष्य भी अध्यापकों के प्रति सम्मान से भरे हैं।

हाँ, यह सत्य है कि जहाँ शिक्षा व्यापार बनेगी वहाँ नैतिक मूल्यों की तलाश निरर्थक है। आज हम अपने बच्चों को गली-गली खुले तथाकथित अंग्रेजी माध्यम उन स्कूलों के हवाले कर निश्चिंत हो जाते हैं, जहाँ गुड मार्निंग, मैडम, सदियों से गाई जा रही दो-चार अंग्रेजी 'पोयम्स' रटाना या काउ, कैट, एप्पल, वन, टू, का पट्टा अपने बच्चे के गले में टांगें देख हम फूले नहीं समाते हैं। माफ करे, जो किसी अबोध बालक को उसकी मातृभाषा, उसकी मातृ संस्कृति से दूर ले जाए वह शिक्षा हो ही नहीं सकती। शिक्षा वह जो बंधनों से मुक्त करे या शिक्षा वह जो बंधनों में जकड़े, मासूम बच्चे के शारीरिक, मानसिक विकास में बाधक बने? पर संकट यह है कि हमें अपने बच्चे को श्रेष्ठ मानव नही, 'मनी मेकिंग मशीन' बनाना है।

शिक्षक को सम्मान दिए बिना शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं है। आज शिक्षक बनना किसी की प्राथमिकता नहीं है। डॉक्टर, इंजीनियर, सीए, सीएस, आईएएस सबका सपना है। जब कुछ न बन सके तो चलो टीचर ही बन जाए। स्पष्ट है मजबूरी में अध्यापक बनने वाला जीवन भर मजबूर ही रहेगा। उससे बहुत ज्यादा आशाएं भी करे तो क्या यह उससे अन्याय नहीं होगा। एक प्रसिद्ध कहावत है- 'टीचर्स शुड बी दि बेस्ट माइंड्स ऑफ दि कंट्री।' एक गलत अध्यापक का चयन सैकड़ों बच्चों के कैरियर को ध्वस्त कर सकता है। एक सच्चा अध्यापक उस दीये के समान है जो स्वयं जलकर संसार को रोशनी देता है। वह न सिर्फ अबोध बच्चों का हाथ थामता है, उसकी प्रतिभा भी निखारता है। वह शैक्षिक ही नहीं जीवन दोनों का पाठ भी पढ़ाता है।

और अंत में अमेरिका के महान राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा अपने बच्चे के अध्यापक को लिखे उस पत्र की चर्चा करना चाहूंगा जिसमें उन्होंने कहा था, 'तुम मेरे बच्चे के भविष्य-निर्माता ही नहीं भाग्य-विधायक भी हो। तुम्हीं उसे बता सकते हो कि हराम की कमाई में बरकत नहीं होती। तुम्हीं उसे स्वयं को एवं अन्यों को सम्मान देना सिखा सकते हो। तुम्हीं उसे बताओगे कि पसीना बहाकर कमाया गया एक डॉलर सड़क पर मिले सौ डॉलर से अधिक मूल्यवान होता है। तुम्हीं से वह सीखेगा कि सत्य की राह दुर्गम अवश्य है लेकिन अंततः वही कल्याणकारी

शेष पृष्ठ 26 पर....

'पशुधन' नहीं, 'धनपशु' हैं आवारा

-अर्पण जैन 'अविचल'

शहर में ट्रैफिक सिग्नल के सामने, अस्पताल में लगे नीम के पेड़ के नीचे, रास्ते के किनारे, कचहरी के खुले बरामदे में, चौराहों के बीचों-बीच, हाँफती रेलवे लाइन पर नेरोगेज रेल के सहारे खड़ा, कभी पोलिथीन तो कभी कूड़ा करकट खाता, कभी शहरी सभ्यता के बीच आ जाता, कभी कुछ जहरीला खा लेने से परमेश्वर शरण में चला जाता और आदम की तरक्की की इबारते गुथता शहर और उन बेजुबान पशुधन को शहरी तरक्की में बाधक समझता प्रशासनिक अमला और आम जनमानस।

यही व्यवस्था का ताना-बाना बुनता बुनकर तमस के तंज में वैश्विक प्रगति के सपने बुनने को ही शहर की प्रगति मानता हैं। चाक-चौबंध व्यवस्थाओं के तंज के सहारे जीने की नाकाम कोशिश की उधेड़बुन में लगा शहरी मानव धरती के प्राण को आवारा मानने को आतुर हो चला हैं। इसे शहर की प्रगति मानना समय की भूल के खाके के सिवा कुछ नहीं हैं।

राजनीति के चारागाह से लेकर अफसरशाही के बीच झूलती आस्था के बिंब में पशु को आवारा सिद्ध करने हेतु पूरी सियासत बिछ सी गई हैं। वर्तमान में मानसून के मौसम में चारे की कमी और पशुपालकों की अदद लापरवाही सहित संकट की घटा ने राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के आधार पशुओं को बर्बरता के हल में जोत दिया हैं। शहरी व्यवस्था की मुख्य धारा में जब संकट के लिहाज से पशुओं को माना जाने लगा तो निश्चित तौर पर सांस्कृतिक विरासत के अंधे कुएँ में भी उबाल सा आ गया, जलविहीन धरती की कल्पना मात्र से सिहर जाने वाली आबादी एक बार पशु विहीन समाज की कल्पना कर के भी देखे, शायद अस्तित्व पर उठता प्रश्नचिह्न भी नजरबद्ध हो जाएगा।

आम पशुपालक भी संकट में हो सकता हैं, पर उन्होंने अपने पशुओं को समाज में स्वच्छंद छोड़ तो दिया हैं, किंतु इसका सर्वाधिक असर गाय और बछड़ों पर पड़ा है, क्षेत्र में बेसहारा घूमने वाले पशुओं में सबसे अधिक संख्या इन्ही पशुओं की है। शहर में भी संकट है, पशुओं को खाने के लिए खेत खलिहानों में भी कुछ नहीं मिल रहा, खेत भी तो खाली हैं। जहां थोड़ी बहुत खेती है वहां वे पहुंच नहीं सकते।

इन्हीं सब शहरी पशुपालकों के सभ्यतागत लिबासों और परंपराओं ने उन बेजुबान और बेसहारा पशुओं को 'आवारा' घोषित कर दिया हैं। बीते मार्च माह में हिमाचल विधानसभा में सत्ता पक्ष और विपक्ष पशुधन को बेसहारा सड़कों पर छोड़ देने से उपजी स्थितियों पर चिंतित दिखा था, प्रश्नकाल के दौरान एक सवाल पर समूचे सदन ने पशुओं को बेसहारा छोड़ने की प्रवृत्ति को गलत ठहराया। सदन के एक सदस्य ने जब आवारा पशुओं की समस्या पर कुछ कहा तो मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह तुरंत अपनी सीट से उठे और कहा कि पशु आवारा नहीं होते। पशुओं को आवारा कहने की बजाय उन लोगों को आवारा पुरुष कहो जो पशुओं को बेसहारा छोड़ देते हैं। उसके बाद सदन में सड़कों पर छोड़े गए पशुओं के लिए बेसहारा शब्द का प्रयोग किया गया।

आखिर संवेदनाओं का दृष्टिकोण की अधर में लटक चुका हैं जहाँ जीवन की विराटता का दृष्टांत भी आज आवारा सिद्ध हो रहा हैं? सनातन धर्म में गौवन्श सभी देवी-देवताओं का एक स्थान हैं, इसके बारे में शास्त्रों में लिखा भी है-

'कहु बिधि हमहिं एक अस्थानू,
जहाँ मिलि रहहिं होइ सममानू
सुनहुँ देव तब कहेउँ बिधाता,
सकल निवास एक गौमाता।।'

अर्थात:- देवताओं ने विधाता से पूछा की प्रभु हमें कोई एक ऐसा स्थान बताइए जहाँ हम सब एक साथ रह सके, हम सब की एक साथ पूजा हो सके, तब ब्रह्मा जी ने सभी देवताओं से कहा कि 'हे देवगण!!, आप सबको गौमाता के शरीर में निवास करना होगा, उसी की पूजा मात्र से आप सब की पूजा हो जाएगी'।

धर्मपरायण जनमानस की भावनाओं को पशुपालकों द्वारा बड़ी चतुराई के साथ जिस तरह से खेला जा रहा हैं यह संस्कृति पर न केवल हमला हैं बल्कि सार्वभौमिक सनातनी विरासत पर कुठाराघात भी हैं।

पूजनीय और आस्था के धरातल की अलौकिक रश्मियों को जब सड़कों पर पशुपालक केवल अपनी सुविधा और बचत के चलते छोड़ देते हैं तो उन धन पशुओं पर कार्यवाही क्यूं कर नहीं होती?

सड़कों पर बेसहारा घूमते पशुओं से सारा प्रशासनिक अमला चिंतित हैं, पशु पालकों द्वारा स्वयं के पालित पशु, जिनमें अधिकांश गौवंश है, अनुत्पादक हो जाने पर पशुओं को घर पर बांधा नहीं जाता है, बल्कि घर से छोड़ दिया जाता है और यही गौवंश बेसहारा रूप में शहर भर में विचरण करते हैं। आखिर पशुपालकों को इनकी चिंता क्यूँ नहीं होती?

शासन ने जिस तरह से गौ संवर्धन बोर्ड बनाया, यहाँ तक की गौशाला निर्माण हेतु निजी संस्थाओं को भी अनुदान दिया जा रहा हैं फिर सड़कों पर घूमते बेजुबान उपेक्षित क्यूँ? यह इस बात का प्रमाण है कि शासन द्वारा पशु संरक्षण की दिशा में किया जा रहा प्रयास या तो सही लोगों द्वारा संचालित नहीं किया जा रहा हैं या फिर उस पर भी भ्रष्टाचार की दीमक लगने से सड़ान्ध आना शुरू हो गई हैं।

पशुधन को बेमतलब ही दोषी माना जा रहा हैं, पशु में विवेक और बुद्धि की चालाकता की कमी ही उसे अपराधी सिद्ध करने पर तुली हुई हैं। आखिर किस माटी से जन्मा हुआ मानस हैं या जो उस देवतुल्य वंश को दुतकार कर शहरी विलासिता के वैभव में खोया हुआ हैं।

गाँव-शहर में मनुष्य की तरह चौपाया जीव भी रहने का अधिकारी हैं, यह शहर केवल दौपाया मनुष्य के लिए ही नहीं बल्कि चौपाया जानवर के रहने का भी स्थान हैं। शहर के आस्ताने में बँध धनपशु मानुस खुले घूमते पशुओं का ना जाने कितने नामकरण कर देते हैं, सब्जी मंडी, किराना व गल्ला मंडी, दुकानों, गली सड़क में मुंह मारते दिखा देते, सड़क, गली, मुहल्ले में घूमते पशुओं को देख उन्हें ऐसा लगता हैं जैसे नारा लगाते आन्दोलनकारी, नेता की तरह हड़ताल पर बैठ जाते हैं। आप लाठीचार्ज करों या बल बुलाइए, वे खुद में मस्त रहते हैं। पशु मालिक खुश होते हैं अपने पशुधन को आवारगी का तमगा दिलवाकर, बेचारे जानवर यहाँ-वहाँ मुँह मारकर पेट भर लेते हैं। फिर भी सुबह-शाम दूध देते हैं।

शहर धर्म और धार्मिकता से भी भरपूर है, रोज पुण्य कमाने के लिए इन्हें वे चारा भी खिलाते रहते हैं, कहते हैं इन पशुओं को चारा-पानी देने से धन-धान्य की वृद्धि होती हैं ग्रह दोष शांत रहते हैं परंतु गौवन्श को प्रताड़ित करने और उनकी चिंता ना करने वाले इन पशुमालिकों पर कभी ग्रहदोष नहीं मंडराते। जो इन्हें मुफ्त के माल पर मुंह मारने हेतु आवारा बना देते हैं।

शास्त्र यह भी कहते है कि-

'धेनु सहहि दुख कोटि अपारा,
ताको कोउ नहिं देखनहारा।
जगत मात दुख होउँ बेहाला,
कस कठिन देख कलिकाला।।'

अर्थात्- गौमाता निरंतर करोड़ों दु:ख सहन कर रही, किंतु इस कलियुग में उसे देखने वाला कोई नहीं है, संसार की माता दुखी हैं, तकलीफ में है, उसकी देखभाल करना हर मानव का धर्म हैं।

मानव ने विकास की गगनचुंबी इमारतों के सादृश्य अवस्था की गहन समझ जरूर विकसित कर ली हैं किंतु यही सब यदि समाज का हिस्सा है तो जीव जंतुओं के लिए किसी नये ब्रह्माण्ड की रचना कर दीजिए, शायद उसी से ही शालीनता का सम्मान हो जाए या धनपशुओं का कोई संभ्रांत शहर बस जाए।

जब-जब भी शहर की जनता ने मवेशियों के आवारा विचरण पर हाहाकार मचाया हैं, तब मीडिया के स्वर भी

उन्हीं मवेशियों के विरोध में उठे हैं, अखबारों की हेडिंग भी यही बनीं है कि 'शहर को आवारा पशुओं ने बनाया बंधक', 'आवारा पशुओं ने किया नाक में दम', 'यातायात व्यवस्था में बाधक आवारा जानवर', 'शहरी सौंदर्य को पलिता लगाते आवारा मवेशी', 'स्मार्टसिटी का सौंदर्य मवेशियों के कारण खतरे में...'।

आखिर किस दुनिया में जीने लगा है मीडिया भी, जिसमें बेजुबान को अपराधी मानकर शहरी खाका को लिखने वाले लोग उन धन कुबेर पशुपालकों को पाक-साफ मानने लग गये? आखिर इन मवेशियों से ज्यादा तकलीफदेह तो वे स्वार्थी और लालची पशुपालक हैं जो पशुओं के खानपान पर लगने वाले अपने खर्च को बचाने की लालच में उन्हें शहर में खुला छोड़ देते हैं, फिर वही पशु न चाहते हुए सभ्यता का बाधक बन जाता हैं। आखिर वो खुले में घूमने का आदी हैं, उसे आकाश का खुलापन और रसातल का प्रेम खींच लाता हैं अपने रंग में मस्ती करने के लिए। यदि पशुओं के दूध से व्यापार करना जानते हो तो उनका पालन पोषण करना भी तुम्हारी जिम्मेदारी हैं, और वृद्धावस्था में उसे संभालना भी। जिस तरह बुजुर्ग माँ-बाप भी बुढ़ापे में व्यक्ति की जिम्मेदारी का हिस्सा होते है उसी तरह पशु भी हैं। तब इनका जमीर कहाँ चला जाता हैं।

जिम्मेदार केवल कत्री काटने में ही अपनी भलाई समझते हैं, जबकि यथार्थ के धरातल पर स्वामित्व का स्वांग रचना महज कूटनीतिक षडयंत्र ही माना जाएगा।

इसी सन्दर्भ में मध्यप्रदेश के इंदौर नगर निगम ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया हैं जिसमें स्पष्ट किया है की यदि शहर में कोई पशुधन घूमता पाया जाता हैं तो उसे पकड़ कर, उसके मालिक का पता-ठिकाना खोज कर उसके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी, दुबारा उसी मालिक का मवेशी पकड़ा जाता है तो मालिक को जिलाबदर किया जाएगा। होना भी यही चाहिए, क्योंकि मवेशियों को शहर में खुला छोड़ कर ये धन पशु यानी मवेशियों के मालिक केवल अपनी जिम्मेदारियों से मुक्ति पाते हैं और शहरभर परेशान होता रहता हैं। उन बेचारे जानवरों को लोग आवारगी से नवाज देते हैं जबकि आवारा वे 'पशु' नहीं हैं, बल्कि आवारा पशुपालक 'धनपशु' हैं।

गौशालाएँ बनीं हैं व्यवस्थाए बनीं हैं, सरकारी योजनाओं का भी रेखांकन उभरा हुआ हैं, उसके बाद भी शहर में मवेशियों के लिए कोई जगह नहीं होती जहाँ वे चैन की सांस ले सके? आखिर किस दिशा में सांस्कृतिक विरासत का गला घोटा जा रहा हैं।

मानव ने शहर, नगर, ग्राम को केवल अपने रहने के लिए ही मान लिया हैं, इन जानवरों के संसार के लिए कुछ छोड़ा भी नहीं... स्वयंभू इस धनसंपदा का मालिक बना बैठा हैं, किंतु इस बात से बेखबर भी है कि प्रकृति की हर संपदा पर जितना अधिकार आदमी का है उतना ही पशु-पक्षियों का भी हैं।

उसी आदम रूपी संभ्रांत चित्रकारों ने अपने अधिकारों की बजाय मूक जीवजंतुओं के हक को मार दिया हैं इसी कारण पशुओं को शहर में आवारा करार दिया जा रहा हैं। शायद ये पशु नहीं बल्कि शहर 'आवारा' हो चुका हैं, जिसे यह भी ध्यान नहीं कि जिसके कारण यह संपदा है, खेत है खलिहान हैं, अनाज है, भोजन है, सब कुछ हैं इस शहर पर उसका भी पूर्ण अधिकार हैं और यदि कही व्यवस्था संचालन में कोई बाधा उत्पन्न हो रही हैं तो उन बेसहारा जानवरों पर आरोप-प्रत्यारोप की बजाए उन धन कुबेरों को बंधक बनाइए जिनके कारण चौपाया जानवर अपनी आजादी के हक से वंचित हैं... शायद संविधान की किताब ने प्राकृतिक न्याय दृष्टांत का उल्लेख उन बेजुबानों के लिए नहीं किया हैं या कहे वो अपना अधिकार माँगने में असक्षम है, जिसका फायदा जुबान वाले बड़ी खूबसूरती से उठा रहे हैं।

शहर की खूबसुरती उसके बाहरी अंगवस्त्रों से नहीं बल्कि उसमें रहने वाले लोगों की मानसिक ताजगी और सभ्यता के सम्मान से होती हैं। शहर में उठते-बैठते, घूमते-ठहरते पशुधन को आवारा कहना न्यायोचित नहीं बल्कि शहरी विकास के मुँह पर अर्पण की गई गाली है, भौतिकतावादी समाज जिस भी नजरिए से शहर का नाप-तौल कर रहा हैं उस नजरिए में भी जीव-जानवरों का अहम किरदार हैं और यह भी सार्वभौमिक सत्य हैं कि आदमी से ज्यादा वफादार, ईमानदार और कृतघ्न जानवर ही होता हैं। आदमी स्वार्थवश भूल जाता है

शेष पृष्ठ 13 पर....

भगिनी निवेदिता सेवा न्यास द्वारा किया गया सेवा कार्य

विश्व हिन्दू परिषद के प्रकल्प भगिनी निवेदिता सेवा न्यास द्वारा झण्डेवाला माता मंदिर के सभागार में दिनांक 07 अगस्त 2016 को पाकिस्तान से प्रताड़ित हिन्दू परिवार जो कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में शरण लिये हुए हैं के प्रतिनिधियों तथा पाकिस्तान से 96 हिन्दू सदस्य जो कि एक माह के धार्मिक वीजा पर आये हुए हैं उनके साथ एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिममें उनकी समस्याओं की जानकारी ली गयी तथा वि.हि.प. के प्रयास से भारत सरकार द्वारा अभी तक उनको जो सुविधायें प्रदान की जा रही हैं उसके बारे में जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय चम्पत रायजी, अन्राष्ट्रीय महामंत्री वि.हि.प. तथा अध्यक्षता श्री महावीर प्रसाद गुप्ता, संरक्षक इन्द्रप्रस्थ वि.हि.प. दिल्ली प्रान्त ने की तथा प्रशान्त हरतालकर, मंत्री वि.हि.प. विदेश विभाग ने विस्तार से विदेशों में हिन्दुओं को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उनके बारे में बताया।

विश्व हिन्दू परिषद के प्रकल्प भगिनी निवेदिता सेवा न्यास के प्रयास/सहयोग से Heart Hindu Emergeny Aid and Relief Team द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर डॉ. शिल्पी के नेतृत्व में दिनांक 21 अगस्त 2016 को पाकिस्तान से प्रताड़ित हिन्दू परिवार जो कि मजनूं का टीला, निकट गुरूद्वारा, दिल्ली में शरण लिये हुए हैं के लिए लगाया गया। डॉक्टरों ने सभी प्रकार के मरीजों का परीक्षण किया तथा नि:शुल्क दवा वितरित की। भगिनी निवेदिता सेवा न्यास के महामंत्री महावीर प्रसाद गुप्ता के अनुरोध पर डॉ. शिल्पी ने आश्वासन दिया कि प्रत्येक माह के तीसरे रविवार को चिकित्सा शिविर लगाया जायेगा। न्यास के पदाधिकारियों ने डॉ. शिल्पी व उनकी टीम का आभार व्यक्त किया।

प्रेषक : **महावीर प्रसाद गुप्ता**
महामंत्री, भगिनी निवेदिता सेवा न्यास
संरक्षक इन्द्रप्रस्थ वि.हि.प.

वास्तव में महान योद्धा शान्ति की इच्छा करते है। शान्ति की इच्छा करना कोई भय का चिह्न नहीं है।

-महाभारत

गरीबों को श्री गणेश जी महाराज से ज्यादा रिद्धि-सिद्धि चाहिए

-डॉ. रिखब चन्द जैन

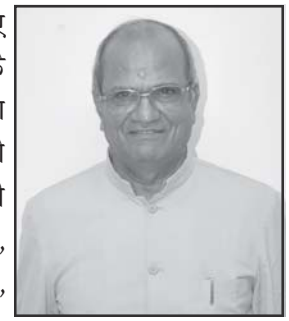

सिद्धि विनायक श्री गणेश जी रिद्धि-सिद्धि के दाता और प्रत्येक कार्य का प्रारम्भ 'श्री गणेश' के आह्वान से होता है। कार्य के 'श्री गणेश' करने को ही कार्य को प्रारम्भ किये जाने की संज्ञा है।

शिव-पार्वती पुत्र सब देवों में प्रथम पूज्यनीय है और सर्वाधिक मंगलकारी है। इस वर्ष गणेश जी महाराज गरीबों की कठनाईयों को देखते हुए, महंगाई को देखते हुए, उनकी जरूरतों को देखते हुए, उनकी इच्छाओं की प्रबलता को भांपते (समझते) हुए गरीबों, शोषितों, दलितों और पिछड़े लोगों पर अधिक कृपा बरसाये ताकि गणेश पूजा उनके लिए सफल साबित हो सके। दीन-दु:खी और परेशान लोगों पर गणेश जी की नजर सबसे पहले जाती है। गरीब, गरीब ना रहें। उसके संकट के दिन दूर हो, उन्हें दाल-रोटी अच्छी मिल सके। उनकी दवाई-पानी की जरूरतें पूरी हो सके। उनके बच्चों का अच्छी शिक्षा के द्वारा भविष्य बन सके। ऐसी ही प्रार्थना श्री गणेश जी महाराज से करते हैं।

सरकार, अधिकारी, प्रशासन और समाज सेवी वर्ग को श्री गणेश जी महाराज, गणेश उत्सव के अवसर पर गरीबों की मदद के लिए उनकी तकलीफें दूर करने के लिए निमित्त बनायें, उन्हें प्रेरणा दें और ऐसे कार्यों में उनको सफलता मिले। ऐसी ही गणेश कृपा प्रत्येक भक्त को, खासकर दीन-दु:खी, शोषित, दलित भक्तों को चाहिए।

गणेश भक्तों को विश्वास है कि अगली गणेश उत्सव पर वो अपने-आपको और अधिक समृद्ध और सुखी पायेंगे तथा और अधिक उत्साह से अगले वर्ष भक्ति के साथ मनायेंगें। विनायक गणेश की सभी भक्तों पर कृपा बरसे। घर-घर धर्म प्रचार हो। जन-जन को सुख, शान्ति, खुशहाली प्राप्त हो। भक्त वत्सल श्री गणेश जी महाराज भक्तों की मनोकामना पूरी करेंगे इसी विश्वास के साथ सभी गणेश भक्तों को मंगलमय बधाई!

॥ जय श्री गणेश ॥

संगठन प्रमुख,
भारतीय मतदाता संगठन

अब सिंध प्रांत ने भी मांगी पाक से आजादी

नई दिल्ली। बलूचिस्तान, गिलगिट-बाल्टिस्तान और गुलाम कश्मीर के बाद सिंध में भी पाकिस्तान से आजादी की मांग जोर पकड़ने लगी है। कट्टरपंथियों की प्रताड़ना से आजिज आकर सिंध के मीरपुर खास में सोमवार को स्थानीय लोगों ने अलग सिंधु देश बनाने की मांग करते हुए नारे लगाए। यही नहीं, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के विरोध में सिंधी और बलूच नेताओं ने ब्रिटेन में चीनी दूतावास के सामने प्रदर्शन भी किया। सिंध पाकिस्तान का दक्षिण-पूर्वी प्रांत है। पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सिंध का लगभग 30 फीसद योगदान है। देश के चार प्रांतों में क्षेत्रफल के हिसाब से यह तीसरे नंबर पर है। यह इलाका भारत से गए मुसलमानों और पाकिस्तान के हिदुओं का गढ़ है। पाकिस्तान के 93 फीसद हिंदू यहां रहते हैं। वैसे प्रांत की कुल आबादी का सिर्फ पांच फीसद ही हिंदू है। आजादी से पहले यहां गुजराती व्यवसायियों की बड़ी संख्या थी। आजादी के बाद से ही यहां की आबादी पर मुस्लिम कट्टरपंथियों की टेढ़ी निगाह रही है। हिंदुओं के जबरन धर्म परिवर्तन के मामले यहां अक्सर सामने आते रहते हैं। हाल ही में हिंदू से मुसलमान बनाए गए एक युवक पर कुरान के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगा और इस मामले में जमकर प्रदर्शन किया गया। कट्टरपंथियों के साथ-साथ पाकिस्तानी प्रशासन भी यहां के लोगों के साथ अत्याचार पर उतारू रहता है। खासतौर पर हिंदुओं के बीच डर का माहौल स्थायी तौर पर बना रहता है इससे स्थानीय लोग आजिज आ चुके हैं। (दै0जागरण)

विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस पर भारत माता मंदिर में किया राष्ट्ररक्षा यज्ञ

हिसार 25 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस पर जन्माष्टमी के पावन पर्व पर भारत माता मंदिर में राष्ट्ररक्षा यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर के योगाचार्य संतोष शास्त्री ने दीप प्रज्ज्वलित कर यज्ञ प्रारम्भ किया। भारत माता मंदिर के अध्यक्ष प्यारे लाला लाहौरिया, महामंत्री विजय शर्मा, भूखंड प्रदाता व ट्रस्टी श्रीमती हरबंसकौर व अनिल मेहता, श्रीमती मनोरमा गुप्ता, विहिप की प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती सुनीता शर्मा, लता सिंघल, मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद की 52 वर्ष की सांस्कृतिक विजय यात्रा के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए विहिप के प्रांत मीडिया प्रभारी व प्रवक्ता विजय शर्मा ने बताया कि विश्व हिन्दू परिषद् सेवा कार्य पुण्य कमाने के लिए नही अपितु राष्ट्रीय व सामाजिक कर्तव्य का बोध कराने के लिए करता है। "हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दुः पतितो भवेत्" "मम दीक्षा हिन्दु रक्षा, मम मंत्र समानता" जैसे ध्येय के साथ देश के विभिन्न अविकसित क्षेत्रों, वनवासियों, गिरिवासियों में एक लाख 25 हजार 358 सेवा प्रकल्प चलाए जा रहे हैं जिसमें 52 हजार 964 एकल विद्यालय है। बच्चों व युवकों में शिक्षा व संस्कार की दृष्टि से 634 बाल वाडियां 639 बाल संस्कार केन्द्र व 583 स्कूल, पुस्तकालय आदि चलाए जा रहे हैं। समाज के दुर्बल व पिछड़े वर्ग के लोगों की स्वास्थ्य रक्षा के निमित 6167 चिकित्सा केन्द्र है जिन में 38 अस्पताल, 24 एम्बुलैंस 653 चल चिकित्सालय, 2000 परीक्षण केन्द्र, तथा 775 अन्य उपचार केन्द्र 2600 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर लगाए जाते हैं।

शर्मा जी ने बताया कि अल्प आय वाले हिन्दू परिवारों को स्वावलम्बी बनाने और उनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने की दृष्टि से 181 सिलाई केन्द्र, 637 महिला उद्योग केन्द 62 कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र 371 ग्रामीण उद्योग प्रशिक्षण केन्द्र, 232 पशुपालन केन्द्र, 35 अन्य स्वयं सहायता समूह तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र चलाए जा रहे हैं।

सामाजिक सहायता कार्य के अन्तर्गत किए जाने वाले कार्यों के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए शर्मा ने बताया कि देश भर में 52045 सामाजिक प्रकल्प है जिनमें 51139 संस्कार पाठशालाएं, 54 अनाथ आश्रम, 22 महिला सुरक्षा केन्द्र, 12 कानूनी सहायता केन्द्र व 804 अन्य सामाजिक सहायता कार्य किए जा रहे है।

वनवासी व पिछड़े लोगों में हिन्दू धर्म की आस्था को जगाने के लिए पूरे देश में 306 से अधिक मन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार किया गया है। पूरे देश में विश्व हिन्दू परिषद् के माध्यम से वनवासी बालकों के लिए 73 छात्रावास चलाए जा रहे हैं।

श्री शर्मा ने बताया कि गौ को सुरक्षा प्रदान करने व उसकी दशा सुधारने के उद्देश्य से विश्व हिन्दू परिषद् ने पूरे देश में गौशालाओं का आयोजन किया व एक लाख 40 हजार बजरंग दल के युवकों के माध्यम से 25 लाख गौवंश को कसाईयों के चंगुल से बचाया है, 600 नई गोशालाएं प्रारम्भ हुई, 200 पंचगव्य औषधि केन्द्र तथा 300 जैविक कृषि केन्द्र प्रारम्भ हुए। वर्तमान में विहिप के कार्यकर्ताओं द्वारा 375 व 1425 सम्पर्कित गौशालाओं में गाय उत्पाद कार्य प्रारम्भ हुआ है।

रामसेतु तोड़ने का षडयंत्र रचा गया, सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में शपथ पत्र दिया कि राम काल्पनिक हैं। 12 सितम्बर 2007 को पूरे देश में चक्का जाम हुआ। 30 दिसम्बर को दिल्ली में 15 लाख हिन्दुओं की विराट सभा हुई। देशव्यापी आन्दोलन कर रामसेतु को टूटने से

बचाया।

कश्मीर घाटी में बाबा अमरनाथ यात्रियों की सुविधा के लिए कोर्ट के आदेश पर बालटाल में 100 एकड़ जमीन मिली लेकिन कठमुल्लों के दबाव में वापिस ली गई। 8 लाख से अधिक शिवभक्तों ने गिरफ्तारी देकर व 60 दिनों तक सफल आन्दोलन चला कर जमीन वापिस ली।

भगवान बाल्मीकि, संत रविदास, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती मनाकर, ऊँच-नीच के भेद को दूर करने का प्रयास चल रहा हैं - "जाति-पांति पूछे न कोई, हिन्दू कहे सो हिन्दू होई" का सन्देश घर-घर दिया जा रहा है।

मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा नष्ट किए गए मंदिरों का पुनर्निर्माण करवाना, प्राकृतिक आपदाओं में राहत शिविर लगाने, मंदिर निर्माण, धार्मिक अनुष्ठान, तीर्थों व धार्मिक स्थानों की यात्राओं, उत्सवों, पर्वों, गंगा रक्षा, धर्म स्थान मुक्ति व अखण्ड हिन्दोस्थान मुक्ति मोर्चा के माध्यम से परिषद् द्वारा हिन्दू जन-जागरण के कार्य किए जा रहे हैं।

विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, महिला विभाग सहित 32 आयामों में कार्य कर रही है। पूरे भारत में 12 क्षेत्रों, 44 प्रान्तों, 6 उप-प्रान्तों, 952 जिलों और 8862 प्रखण्डों के माध्यम से परिषद् की 62927 समितियां पूरे देश में कार्य कर रही हैं।

भारत से बाहर 40 देशों में परिषद् के नाम से व 80 देशों में सम विचारी संस्थाओं के सहयोग से हिन्दू जागरण का कार्य चल रहा है।

हिन्दुओं के नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की सुरक्षा, भारत व विदेशों में रह रहे हिन्दुओं में भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा व गौरव की भावना पैदा करना, छूआछुत आदि कुरीतियों को समाप्त कर समरसता का भाव उत्पन्न करना, धर्मान्तरित बन्धुओं को हिन्दू धर्म में वापिस लाना, मठ-मन्दिरों की सुरक्षा, सुव्यवस्था व धर्मस्थानों की मुक्ति जैसे उद्देश्य को लेकर विश्व हिन्दू परिषद् विगत 52 वर्षों से देश व विदेश में कार्य कर रही है।

राष्ट्ररक्षा यज्ञ में श्रीमती संतोष तायल, रमेश पासी, प्रवीण अरोडा, अनिल गोयल, सुशील वधवा, दलीप वाजपेयी, भारत भूषण, जितेन्द्र सोनी, रमेश सैनी, नरेन्द्र वशिष्ठ आदि उपस्थित थे। विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस पर जन्माष्टमी के पावन पर्व पर स्थानीय प्राचीन रिद्धि-सिद्धि श्री हनुमान मंदिर में हवन-यज्ञ किया गया। इस अवसर पर विहिप के जिला मंत्री रविंद्र गोयल व गौरक्षा विभाग के प्रांतीय प्रमुख डॉ. रमेश यादव व प्रांत मीडिया प्रभारी विजय शर्मा मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर डॉ. रमेश यादव विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना के संदर्भ में जानकारी दी। उन्होंने विभिन्न प्रकार के पूरे देश में किए जाने वाले सेवा कार्यों के बारे में भी जानकारी। हवन यज्ञ में बजरंग दल के कपिल वत्स, अमर कैमरी, संजू सांगवान, संजय मित्तल, दलिप वाजपेयी, नरेंद्र वशिष्ठ, जितेंद्र सोनी, रमेश सैनी, सुशील वधवा, सतीश, श्रीमती सुनीता शर्मा आदि ने आहुति दी। ❑

.....पृष्ठ 9 का शेष

एहसान, किंतु जानवर ताउम्र एहसानमंद रहता हैं।

पशुता की और अग्रसर मानव, स्वभाववश एवं धन लोभ में इतना व्यस्त हो जाता और यह भूल जाता हैं कि उसकी गलतियों की सजा किसी और को मिलने वाली होती है वो भी बेजुबान जानवर 'आवारा' हो जाता हैं इसीलिए 'पशुधन' आवारा नहीं होता 'धनपशु' आवारा होता हैं।

संपादक - खबर हलचल न्यूज
इंदौर (मध्यप्रदेश) दूर:09893877455
Email: arpan455@gmail-com

परमात्मा दिल से वार्तालाप करता है, जबकि दिमाग उसे समझ नहीं सकता।

-श्री अरबिन्दो घोष

एमनेस्टी इंटरनेशनल और दिग्विजय सिंह, प्रसंग जम्मू कश्मीर को लेकर एक नई बहस का

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

एमनेस्टी इंटरनैशनल पश्चिम की एक ऐसी संस्था है जिसका दावा है कि वह दुनिया भर में मानवाधिकारों के उल्लंघन के मामलों को सूँघती है और उसके बाद उसका पर्दाफाश करती है ताकि सम्बंधित देश की सरकार पर दबाब बनाया जा सके। इस संस्था ने अनेक देशों में अपनी शाखा और दफ्तर खोल रखे हैं। पैसे की इसके पास कमी नहीं है। अलबत्ता कहा जा सकता है कि पैसे के जोर पर ही यह अपने कर्मचारियों की सूँघने की ताकत बनाए रखती है। यह अलग बात है कि इसकी घ्राण शक्ति ज्यादातर एशिया और अफ्रीका के देशों में ही प्रखर होती है। यूरोप की ठंड में उसे लकवा मार जाता है। इस एमनेस्टी की एक शाखा हिन्दुस्तान में भी पाई जाती है।

अब दिग्विजय सिंह की बात। पुराने जमाने में इनके पूर्वज राजा हुआ करते थे। लेकिन सरदार पटेल ने इन लोगों का राजपाट छीन लिया। रियासतें समाप्त हो गईं। पर विरासत में मिली घ्राण शक्ति तो समाप्त नहीं हुई। उसी के बलबूते दिग्विजय सिंह दस साल तक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बने रहे। उसके बाद दिल्ली आ गए। वर्तमान में सोनिया कांग्रेस में महासचिव हैं और कहा जाता है विरासत के बल पर ही भारत के प्रधानमंत्री बनने का सपना पालने वाले राहुल गान्धी के दरबार के नवरत्नों में से एक हैं। कोई चीज सूँघते हैं तो चिल्लाते हैं। इससे लोगों का ध्यान आकर्षित होता है। यह अलग बात है कि सूंघ कर, जिसको तरबूज बताते हैं वह नाशपाती होती है।

ऊपर से देखने पर एमनेस्टी और दिग्विजय सिंह में कोई सीधा सम्बंध दिखाई नहीं देता, लेकिन गहराई से देखने पर अजीब साम्य दिखाई देता है। दोनों कश्मीर को लेकर चिंतित हैं। लेकिन दोनों का चिंता प्रकट करने का तरीका अलग-अलग है। एमनेस्टी की जड़ें यूरोप में है इसलिए उसका तरीका भी यूरोप की तरह जलेबीदार है। दिग्विजय सिंह खालिस देसी चीज है इसलिए उनका तरीका चाँद की ओर मुँह करके थूकने जैसा ही है। यह अलग बात है कि बाद में चेहरा अपना ही खराब होता है।

एमनेस्टी ने पिछले दिनों बेंगलुरु में कश्मीर में मानवाधिकारों को लेकर एक आयोजन किया। एमनेस्टी को जैसी आशा थी, उसी के अनुरूप वहाँ देर तक कश्मीर की आजादी को लेकर नारे लगते रहे। उसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि कश्मीर को लेकर वहाँ क्या बोला गया होगा। जाहिर है एमनेस्टी की इस भारत विरोधी साजिश को लेकर देशभर में गुस्सा भड़कता। अब एमनेस्टी वालों ने अपना तर्क दे दिया है। उन का कहना है कि उनके किसी कर्मचारी ने कोई नारा नहीं लगाया। कश्मीर की आजादी के नारे तो आम आदमी लगा रहे थे। एमनेस्टी अच्छी तरह जानती है कि उसके मुलाजिमों को मोटी तनख्वाह नारे लगाने के लिए नहीं बल्कि नारे लगवाने के लिए मिलती है और यह काम उसके मुलाजिमों ने बखूबी अंजाम दे दिया है। कश्मीर में भी सैयद अली शाह गिलानी और उनकी पूरी जमात सुरक्षा बलों पर पत्थर खुद नहीं फेंकती बल्कि पैसे देकर दूसरों के बच्चों से फिंकवाती है। उनके अपने फरजन्द तो विदेशों में आराम की जिन्दगी बसर कर रहे हैं और एमनेस्टी जैसों की झोलियाँ कश्मीर में मानवाधिकारों के तथाकथित उल्लंघन की रपटों से भरते हैं। एमनेस्टी के कर्मचारियों ने भारत विरोधी नारे नहीं लगाए होंगे। एमनेस्टी के वेतनभोगियों को इसकी जरुरत भी नहीं थी। यह उसके एजेंडा में भी नहीं है। लेकिन एमनेस्टी ऐसे भारत विरोधियों को मंच प्रदान करती है। यह मंच शक्तिशाली भी है और इसके पीछे यूरोप-अमरीका की

ताकत भी है। इसलिए ऐसे मंच पर आकर कश्मीर की आजादी के नारे लगाने वाले बेखौफ हो जाते हैं। उनको लगता है इस बड़े और अन्तर्राष्ट्रीय मंच का एक रुतबा है। इसकी अपनी ताकत है। इसलिए इस मंच से कश्मीर की आजादी और भारत तेरे टुकड़े होंगे हजार के नारे लगाने वालों का सरकार कुछ नहीं बिगाड़ सकती। बेंगलुरु में एमनेस्टी ने यही साजिश और इसी चाल के अन्तर्गत भारत विरोधियों को ढाल मुहैया करवाई है। सभी जानते हैं कि आज इस प्रकार के भारत विरोधियों को इसी ढाल की सर्वाधिक आवश्यकता है। यह ढाल श्रीनगर से लेकर बेंगलुरु तक उन्हें एमनेस्टी इंटरनैशनल ही मुहैया करवा सकती है और वह करवा रही है। साल के अंत में एमनेस्टी एक मोटी रपट प्रकाशित करती है। वह तृतीय विश्व के देशों को डराने के काम आती है। उस रपट से डरी सरकारें सारा साल एमनेस्टी को सफाई देते-देते गुजार देती हैं। एमनेस्टी का एक दूसरा तर्क भी है कि हिन्दुस्तान में तो उसका कामकाज भारतीय शख्स ही देखता है। इसलिए बेंगलुरु में कश्मीर को लेकर आयोजन करवाने वाले भारत विरोधी कैसे हो सकते हैं? एमनेस्टी के गोरे मालिक यह समझते हैं कि इस तर्क से सबकी बोलती बन्द हो जायेगी। लेकिन शायद लंदन में बैठे एमनेस्टी के मालिकों को ज्ञात नहीं है कि जयचन्द उनके लिए तो महानायक हो सकते हैं लेकिन भारतीय अभी भी उसे खलनायक और देशद्रोही ही मानते हैं।

पंडित जवाहर लाल नेहरु के ही खानदान से ताल्लुक रखने वाली गीता सहगल ने जो एक लम्बे अरसे तक एमनेस्टी इंटरनैशनल से जुड़ी रही हैं, उन्होंने इस संस्था के काले कारनामों का खुलासा किया है। उनके अनुसार यह संस्था इस्लामी आतंकवादी समूहों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग करती है। इतना ही नहीं इस संस्था के वित्तीय स्रोत भी शक के घेरे में रहते हैं। वैचारिक लिहाज से भी इस संस्था का दिवालिया निकल गया है, जो नाम तो मानवाधिकारों का लेती है लेकिन छद्म समर्थन आतंकवादियों का करती है। सहगल के अनुसार यह संस्था ब्रिटेन में जिहादी साहित्य प्रकाशित और प्रसारित करने वाले लोगों को समर्थन देती है। गीता सहगल इस संस्था के अन्दर रही हैं इसलिए इसके गली मुहल्लों को अच्छी तरह जानती हैं। लेकिन सोनिया गान्धी की कांग्रेस में इन जानकारियों की कोई कीमत नहीं है। वहाँ के नवरत्न तो दिग्विजय सिंह हैं जो जाकिर नायक को शान्ति दूत बताते हैं। उनके हिसाब से अपनी जान पर खेल कर भारत के सीमान्त की रक्षा कर रहे सुरक्षा बल नायक नहीं हैं बल्कि वे तो आम कश्मीरियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले खलनायक हैं।

अपनी पार्टी की रीति-नीति के अनुकूल ही कर्नाटक प्रदेश की सोनिया कांग्रेस सरकार तुरन्त एमनेस्टी इंटरनैशनल के बचाव में उतरी। वहाँ के गृहमंत्री ने कहा कि यह संस्था बेंगलुरु में काफी लम्बे अरसे से काम कर रही है। कश्मीर को लेकर इस ने जो कार्यक्रम आयोजित किया था, उसमें कुछ भी तो गलत नहीं था। दरअसल कश्मीर की आजादी के नारे को लेकर सोनिया कांग्रेस के भीतर उसके पक्ष में एक आम सहमति बनती दिखाई दे रही है। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय में जब कश्मीर की आजादी और भारत के हजार टुकड़े करने की इच्छा प्रकट की गई थी तो तुरन्त उनके समर्थन में राहुल गान्धी पहुँच गए थे।

लेकिन एमनेस्टी के दुर्भाग्य से सरकार ने भयग्रस्त होने की बजाए उससे ही सवाल जबाब शुरु कर दिया। उसको विदेशों से मिल रहे करोड़ों रुपए के स्रोतों के बारे में पूछना शुरु कर दिया। एमनेस्टी के मंच पर कश्मीर की आजादी को लेकर गाए बेसुरे गीतों के पीछे छिपे साजिन्दों की तलाश शुरु हो गई। हड़कम्प मचना लाजिमी था। भारत में पहली बार हुआ था कि किसी ने गोरे मालिकों के इस दुमकटे भेड़िए को पकड़ा था।

तब अचानक सोनिया कांग्रेस के महासचिव और राहुल गान्धी के नवरत्नों में से एक दिग्विजय सिंह नमूदार हुए। उन्होंने एमनेस्टी इंटरनैशनल के एजेंडा को ही आगे बढ़ाते हुए कश्मीर को लेकर अब तक की बहस को ही एक नया मोड़ देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कश्मीर के एक हिस्से पर भारत ने कब्जा किया हुआ है और दूसरे हिस्से पर पाकिस्तान ने कब्जा किया हुआ है। इसलिए सरकार को वहाँ के लोगों से बात करनी चाहिए।

कश्मीर को लेकर हो रही बहस को यह एक बहुत ही शातिराना तरीके से नया मोड़ देने की यह राष्ट्रविरोधी कोशिश थी। भारत के अन्दर एक और गुलाम नबी फाई बनने की कोशिश। फाई अमरीका में बैठकर कश्मीर के प्रश्न को पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतों के हितों के अनुरूप ढालने की कोशिश कर रहा था और यही काम दिग्विजय सिंह ने हिन्दुस्तान में बैठ कर करना शुरु कर दिया। एमनेस्टी से उनके प्रत्यक्ष तार जुड़े हों या न हों लेकिन दोनों एक ही रास्ते पर चलते दिखाई देने लगे। पकड़े जाने पर पलट कर कह दिया, जबान फिसल गई। चमड़े की जीभ है। फिसल भी तो सकती है। लेकिन दिग्विजय सिंह बुढ़ापे के चलते फिसलने बहुत लगे हैं। एक बार फिसले तो शादी कर ली और अब दूसरी बार फिसले हैं तो कश्मीर को इंडिया आकूपाईड घोषित कर दिया। जहाँ तक जम्मू कश्मीर के लोगों से बातचीत करने का सवाल है, उससे कौन इंकार कर सकता है। दिग्विजय सिंह जानते हैं कि मोदी सरकार तो अब आई है, पिछले सत्तर साल से कांग्रेस कश्मीरियों के नाम पर बातचीत ही तो करती रही है। उसने इसको लेकर लॉर्ड माऊंटबेटन से बातचीत की, ब्रिटेन सरकार से बातचीत की, अमेरिका से बातचीत की, सुरक्षा परिषद से बातचीत की, पाकिस्तान से बातचीत की, भूमि के नीचे से लेकर ऊपर तक के हर अलगाववादी और आतंकवादी से बातचीत की। उसी बातचीत का नतीजा आज कश्मीर भुगत रहा है। कांग्रेस ने कश्मीरियों से बातचीत करने की बजाए एजेंटों या दलालों से बातचीत का रास्ता अपनाया। फिर चाहे वह शेख अब्दुल्ला हो, चाहे गुलाम मोहम्मद बख्श हो। चाहे मीर कासिम हो या फारूकउमर हो। कांग्रेस यही समझती रही और अब भी समझती है कि कुछ एजेंट सारे जम्मू कश्मीरियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एजेंटों के माध्यम से बातचीत करने का ही नतीजा था कि घाटी में लोगों ने कहना शुरु कर दिया दिल्ली से चला लोकतंत्र पठानकोट तक आकर रुक जाता है। बातचीत जरुर होनी चाहिए लेकिन वह बातचीत जम्मू के लोगों से होनी चाहिए, लद्दाखियों से होनी चाहिए। गुज्जरों से होनी चाहिए, बकरबालों से होनी चाहिए। बल्तियों से होनी चाहिए। दरदों से होनी चाहिए। पहाड़ियों से होनी चाहिए। जनजाति समूहों से होनी चाहिए। गद्दियों से होनी चाहिए। मोनपा से होनी चाहिए। शिया समाज से होनी चाहिए, दलित समाज से होनी चाहिए। मीरपुरियों से होनी चाहिए। कश्मीरियों से होनी चाहिए, चाहे वे हिन्दू हों सिख हों या फिर इस्लाम को मानने वाले हों। लेकिन सरकार इन सभी से तो बातचीत नहीं करती। वह या तो आतंकवादियों से बात करती है या फिर एजेंटों से बात करती है। या फिर गिलानियों, हमदानियों, बुखारियों करमानियों से बात करके मान लेती है कि सारे जम्मू कश्मीर से बात हो गई है। नरेन्द्र मोदी को इस बात का श्रेय जायेगा कि उन्होंने दलालों या एजेंटों को परे हटा कर सीधे-सीधे प्रदेश के लोगों से सम्वाद स्थापित किया। उससे घाटी में भी एक नई हवा बहने लगी। यह नई और ताजी हवा ही आतंकवादियों को एलर्जी दे रही है और गिलानियों, हमदानियों और करमानियों का नजला जुकाम बढ़ा रही है। आज घाटी में जो हो रहा है वह आतंकवादियों की एलर्जी और गिलानियों के नाले जुकाम का दुष्परिणाम है। पाकिस्तान की साजिश तो किसी से छिपी नहीं है। घाटी को पटरी से उतारने का इन सभी का यह अंतिम प्रयास ही सिद्ध होगा। क्योंकि नरेन्द्र मोदी ने बहस को जो नई दिशा दे दी है, उसमें जम्मू कश्मीर के लोगों की भूमिका प्रमुख हो जायेगी और एजेंट अप्रासांगिक हो जायेंगे। शायद यही कारण है कि पाकिस्तान को खुल कर सामने आना पड़ा और बुरहान बानी को शहीद घोषित करना पड़ा। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से लेकर बरास्ता हैदराबाद विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय से होते हुए, बेंगलुरु में एमनेस्टी और पुणे में दिग्विजय सिंह द्वारा की जा रही ये सारी हरकतें इन अंतिम प्रयासों को सफल बनाने की छटपटाहट मात्र कहीं जा सकती हैं।

अच्छी सलाह का तिरस्कार वह करता है, जिसका अन्त समय नजदीक होता है।

-रामायण

आनंद मंत्रालय की चुनौतियां

-प्रो. बृज किशोर कुठियाला

राजनीतिज्ञों की सोच में अत्यंत शुभ परिवर्तन का संकेत है मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आनंद मंत्रालय का निर्माण। पहली पंचवर्षीय योजना से लेकर और वर्तमान की बारहवीं योजना तक सभी में भारतीय समाज की भौतिक उन्नति के अनेकों सफल एवं कुछ असफल प्रयास हुए हैं। आज देश में सड़के अधिक हैं, अधिक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं, गगन छूते भवनों की भरमार है। अन्न के उत्पादन में हम केवल आत्मनिर्भर ही नहीं है अपितु हमारे पास निर्यात करने के लिए और सड़कों पर जमा करके नष्ट करने के लिए काफी अनाज है। परन्तु इस सब विकास और उन्नति से क्या समाज पहले से अधिक संतुष्ट, प्रसन्न, सुखी और आनन्दित है? आंकड़ों का आधार लें या अनुभव का इस प्रश्न का उत्तर तो नहीं में ही है।

पूरे विश्व में इस तथ्य को सर्वमान्यता प्राप्त हो रही है कि न्यूनतम भौतिक उन्नति तो अनिवार्य है, परन्तु केवल भौतिक उन्नति को मानव समाज के विकास का मानदण्ड नहीं माना जा सकता। जिनके पास धन-सम्पदा आवश्यकता से कहीं अधिक है, वे भी असंतुष्ट एवं अप्रसन्न हैं। मानसिक रोग, अवसाद व पारस्परिक कलह बहुत अधिक बढ़ चुका है। वर्तमान में सभी खुशी और सुख को ढूंढ़ रहे हैं। अत्यंत छोटे देश भूटान ने सबसे पहले इसके लिए रास्ता दिखाया था। पिछली सदी के छठे दशक में भूटान के नरेश ने संयुक्त राष्ट्र संघ में मानव विकास सूचकांक के साथ-साथ 'हैप्पीनेस इंडेक्स' की बात की थी। मध्यप्रदेश सरकार ने आनंद मंत्रालय बनाकर एक ऐसा राजनीतिक कदम उठाया है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वर्तमान की पूरी मानवता के लिए प्रासंगिक एवं अनिवार्य है।

अंग्रेजी का शब्द 'हैप्पीनेस' उस स्थिति की व्याख्या नहीं करता है, जिसमें कहा जा सकता हो कि मनुष्य आनंदित है। हिन्दी के शब्दों के माध्यम से आनंदित होने के विकास क्रम को समझा जा सकता है। भौतिक आवश्यकताएं पूर्ण होने पर व्यक्ति का संतुष्ट होना इस

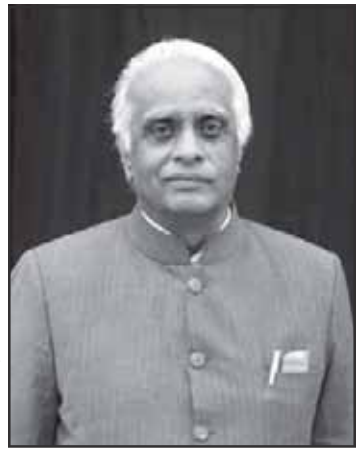

विकास मार्ग का पहला कदम है। इसके लिए जन-साधारण को यह समझना-समझाना होगा कि कितनी धन-सम्पदा और संसाधन जीवन के लिए पर्याप्त हैं। संतुष्ट होने पर मनुष्य प्रसन्न होने की स्थिति में आ सकता है। वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं को सहजता से पूर्ण करके मन से खुशी महसूस करता है। संतुष्टि और प्रसन्नता का वातावरण बनने से मनुष्य को सुखी होने की अनुभूति हो सकती है। इसी विकास की यात्रा का अंतिम पड़ाव है आनंदित होने का। यह वह स्थिति है जब मनुष्य का मन स्थितप्रज्ञ हो जाता है अर्थात् विपरीत या संकट की स्थितियों में भी व्यक्ति सुखी और आनंदित ही अनुभव करता है।

किसान के लिए खेती लाभकारी धंधा हो यह तो अत्यंत आवश्यक है। परन्तु ये सब होने पर क्या किसान प्रसन्न है या वह और अधिक की कामना करता हुआ पहले से अधिक असंतुष्ट और अप्रसन्न है। समाज की इसी मन:स्थिति को संभालना ही आनंद मंत्रालय की मुख्य चुनौती है। विभिन्न प्रकार की लाडली योजनायें समाज में महिलाओं को सुरक्षित एवं समान अधिकार की स्थितियों में ला सकती हैं परन्तु यदि ये प्राप्त हो जाता है तो समाज को सम्पूर्ण रूप से सुख की अनुभूति भी अनिवार्य है। समझना यह होगा कि ये मात्र अध्यात्म का विषय नहीं है। यह तो भौतिक विकास के साथ समानांतर मानसिक विकास का विषय है और इसके लिए भी अत्यंत सावधानी एवं विराट दृष्टि रखकर योजनाएं बनाने की आवश्यकता है।

वैश्विक स्तर पर योग की स्वीकार्यता व मान-सम्मान

मिलना भी इसी दिशा में एक कदम है। परन्तु डर यह है कि योग कहीं केवल मात्र शारीरिक व्यायाम बनकर न रह जाये। योगाभ्यास से ध्यान और फिर साधना और समाधि इन सबको भी आमजन में प्रचलित करने से ही व्यापक रूप से आनंद की अनुभूति होगी, परन्तु ये भी अपने-आप में पर्याप्त नहीं है।

इस सृष्टि की मूल प्रकृति में सह-योग सह-अस्तित्व एवं सहभागिता के सिद्धान्त हैं। सामाजिक जीवन में जब मनुष्य को यह समझ में आएगा कि वह इस सृष्टि की हर वस्तु से, जीव-निर्जीव से, पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है और केवल जुड़ा हुआ ही नहीं है वह शेष सभी पर निर्भर भी है। नागार्जुन के इस दर्शन को समझकर यदि समाज जीवन में व्यापक रूप से क्रियान्वित किया जाता है तो न केवल धन-सम्पदा अधिक से कम की तरफ गतिमान होगी परन्तु सुख और दु:ख भी आपस में बंटेंगे और बंटा हुआ सुख कई गुना बढ़ जाता है और बंटा हुआ दु:ख कई गुना कम हो जाता है।

इसलिए प्रस्तावित आनंद मंत्रालय का कार्य अन्य मंत्रालयों से भिन्न होने वाला है, जिसके लिए पर्याप्त बौद्धिक विमर्श एवं समयबद्ध उद्देश्य निश्चित करने होंगे। इस कार्य में यूरोप के कुछ देश जैसे स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, नार्वे आदि से कुछ सीख ली जा सकती है। इन देशों ने भौतिक उन्नति की अंधी दौड़ में दौड़ना कुछ कम कर दिया है और पूर्ण समाज में सुरक्षा एवं सहयोग अधिक-से-अधिक बने ऐसा प्रयास उनकी योजनाओं में होता है। भूटान में तो एक विभाग ही ऐसा बनाया है, जो हर छोटी-बड़ी योजना का मूल्यांकन करके इस बात के आधार पर अनुमोदन करता है कि किस योजना से सकल सामाजिक आनंद बढ़ेगा या प्रति-व्यक्ति प्रसन्नता का सूचकांक बढ़ेगा। मध्यप्रदेश राज्य के राजनीतिक कार्यकर्ताओं, प्रबंधकों एवं विद्वानों से आज पूरा भारतीय समाज ही नहीं वैश्विक समाज नवाचारी कार्य योजनाओं की अपेक्षा कर रहा है। एक नई पहल है इसकी सफलता पूरे मानव समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

(लेखक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)

❑

पाक में हिन्दुओं की दुर्दशा के लिए कौन उत्तरदायी?

वर्ष 1950 में भारत और पाकिस्तान के बीच नेहरू और लियाकत अली खान के बीच दिल्ली एक संधि हुई जिसके अनुसार भारत में मुस्लिम और पाक में हिन्दुओं की सुरक्षा हेतु के लिए प्रावधान किए गए थे। भारत ने इस संधि के अधिक कार्य किया। अल्पसंख्यक आयोग, वक्फ एक्ट, हज़ पर अनुदान, नाम मात्र ब्याज पर ऋण, छात्रवृत्तियां, मदरसों को अनुदान, मौलवियों को वेतन, मुस्लिम छात्राओं को स्कूटी और आरक्षण का लाभ आदि बहुत बड़ी सूची राज्य सरकारों ने बना रखी है इतना अधिक तो लियाकत अली खान ने भी नही सोचा होगा दूसरी ओर पाकिस्तान में हिन्दुओं पर जो अत्याचार हुए उसकी सूची भी बहुत लंबी है।

संधि को हुए अब 66 वर्ष हो चुके हैं पाकिस्तान में हिन्दुओं के हिन्दू विधि से विवाह मान्य नही है। केवल मुस्लिम-निकाह ही मान्य है। हिन्दू विवाह को क़ानूनी मान्यता का बिल अभी विचाराधीन है। पाकिस्तान ने इस संधि का कितना पालन किया है, यह सरलता से समझ में आ सकता है। लेकिन दु:ख इस बात का है अगर पाकिस्तान इस संधि का पालन नही करता तो भारत से कोई भी राजनैतिक दल नही बोलता। एक थे भारतीय जनसंघ के संस्थापक स्व. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जो अपनी असाधारण योग्यता के कारण हिन्दू महासभायी होते हुए भी नेहरू मंत्रिमंडल में कैबिनेट मन्त्री थे, उन्होंने नेहरू मंत्रिमंडल से पाक में हिन्दुओं की असुरक्षा के मुद्दे पर मंत्री मंडल से त्यागपत्र देकर जनसंघ का निर्माण किया था।

आज न जनसंघ है, न मुखर्जी और न उन जैसा कोई नेता। पाकिस्तान को संधि के अनुपालन करने को कहे।

प्रेषक : **ओम प्रकाश त्रेहन**
एन 10, मुखर्जी नगर , दिल्ली 9

परमात्मा की शक्ति के सामने मनुष्य तिनके और धूल के समान है। **-श्री रामकृष्ण**

जात न पूछो साधु की

-विनोद बब्बर

'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारा विश्व एक परिवार है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।। अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। 'अहम् ब्रह्मास्मि'-मैं ब्रह्म हूँ और 'हिंदवः सोदराः सर्वे' सभी हिन्दू सहोदर है। क्या यह आश्चर्य नहीं कि जिस समाज में उपरोक्त श्रेष्ठ उक्तियां लगभग प्रतिदिन सहज प्रयुक्त होती हो वहां जातिवाद, असमानता, छुआछूत जैसी बुराईयां न केवल हिन्दू समाज में बल्कि समानता का दावा करने वाले धर्मान्तरित मुस्लिम ईसाई समाज में भी फल-फूल रही हैं।

असमानता का पर्याय बना जातिवाद कहां से आया, इस पर अनेक मत हो सकते है। अधिकांश विचारकों का मत है कि अंग्रेजों से पूर्व मुगलों ने एकता की प्रतीक हमारी संस्कृति को क्षीण करने के लिए हमें बांटने का षड्यंत्र रचा। दुर्भाग्य से वे सफल रहे क्योंकि हम असावधान थे। निसंदेह नासमझ भी। शायद लालची भी। शायद ऐसे ही अनेक अन्य कारण भी हों। कालान्तर में कबीर, नानक, नामदेव, दादू, तुकाराम, रैदास, चोखामेला से दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, ज्योति राव फुले, गांधी, बाबासाहब अम्बेडकर, श्रीगुरुजी तक अनेक समाज सुधारकों ने इस बुराई को दूर करने का प्रयास किया।

अक्सर कहा जाता है कि मनुस्मृति जैसे ग्रन्थ भेदभाव, असमानता के पक्षधर है। बहुत संभव है इसकी कुछ बाते समय, काल, परिस्थिति अनुसार अप्रासंगिक हो चुकी हो। लेकिन हम यह भूलते हैं कि मनुस्मृति में स्पष्ट कहा गया है- जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विजः उच्यते।

अर्थात् जन्म से सभी शूद्र होते हैं पश्चात् संस्कारों से द्विज बनते है।

जाति को जन्म से जोड़ने वाले भी आज जाति परिर्वतन की अनुमति नहीं देते लेकिन मनुस्मृति (अध्याय 10 श्लोक 65) के अनुसार-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चौति शूद्रताम।
क्षत्रियाज्जातमेवम तु विध्याद्वैश्यात्तथैव च।।

अर्थात् ब्राह्मण शूद्र बन सकता है और शूद्र ब्राह्मण हो सकता है। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी अपना वर्ण बदल सकते हैं। वर्ण (जाति) बदलने के उदाहरण भी मिलते हैं। महाराज अग्रसेन क्षत्रिय से वैश्य हुए। श्रीकृष्ण यदुवंशी कहलाये। क्षत्रिय विश्वामित्र ब्रह्म-ऋषि हुए। यह किसे याद न होगा सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र बिके तो क्षत्रिय का खरीददार एक डोम हुआ। आज भी हमारे समाज की सभी जातियों के गौत्र एक समान ऋषि पर हैं। देश के विभिन्न भागों में ठाकुर क्षत्रिय है तो शूद्र भी। यही दशा शर्मा, राठौर, चौधरी सहित अनेक उपनामों की है। माना जा सकता है कि एक ही परिवार के पुत्र न जाने किन कारणों से धीरे-धीरे इतने दूर हो गए कि सहोदर होते हुए भी उनमें असमानता की दीवार आ गई। न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक स्तर पर भी।

जाति के पक्ष में अनेक तर्क भी हो सकते हैं तो अनेक विरोध भी। लेकिन तमाम विरोधाभासों के बीच जाति एक यथार्थ है। आश्चर्य यह भी कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के बीच ही नहीं इन वर्गों में आपस में भी ऊँच-नीच है। ब्राह्मणों में भी छोटी बड़ी जातियाँ हैं। वे भी एक दूसरे के हाथ का पानी नहीं पीते। तथाकथित छोटी अथवा पिछड़ी कही जाने वाली जातियों भी श्रेष्ठता ग्रन्थी का शिकार है। उनमें भी एक दूसरे को छोटा-बड़ा बताने की प्रवृत्ति है। उनमें भी रोटी-बेटी का संबंध नहीं है। इसे केवल सैकड़ों हजारों वर्षों की दरिद्रता और शिक्षा से दूर रखने का परिणाम भी नहीं कहा जा सकता। यह समस्या हमारी जड़ों में कहीं गहरे तक फैली हुई है। कटु सत्य यह है कि पुराने कुसंस्कारों के लबादे को हम भी एक झटके में उतार फेंकने के लिए मानसिक रूप से आज भी तैयार नहीं हैं।

अनेक अज्ञानी जाति को पूर्व जन्म के कर्मों से जोड़ते हुए इसे उचित ठहराते हैं लेकिन उनका स्वयं का आचरण इसके विपरीत होता है। आखिर वे अगले जन्म की चिंता

क्यों नहीं करते? क्यों भेदभाव, अन्याय, असमानता के पक्षधर बन अपना अगला जन्म खराब करते हें? हमें ऐसी अवैज्ञानिक थ्योरी से मुक्त होना होगा। जड़ हो चुकी अमानवीय परम्पराओं को आधुनिक वैज्ञानिक मानकों पर परखा जाना चाहिए। जीवनमूल्यों को मन, मस्तिष्क और व्यवहार में आचरणीय बनाना होगा। हम सभी को समझना होगा कि सामाजिक समरसता भारतीय संस्कृति की आत्मा है। बेशक हर गांव के अपने देवता है। हर वर्ग की अपनी परम्पराएं हैं। पानी और वाणी की तरह थोड़ी-थोड़ी दूरी में एक ही वर्ग में संस्कार और संस्कृति की भिन्नता देखने को मिलती है। लेकिन विविधता में एकता की भावना ही भारतीय संस्कृति का प्राण है। यह सुखद है कि न केवल आज बल्कि लंबे समय से संत, साहित्यकार, समाजशास्त्री इस विषमता को दूर करने में अपने-अपने ढ़ंग से प्रयास कर रहे है।

नि:संदेह आज शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने इस विभाजन को कम किया है। आज की युवा शिक्षित पीढ़ी अंतर्जातीय विवाह कर रही है। आज शहरी जीवन में रहन-सहन, खानपान में कहीं छुआछूत दिखाई नहीं देती। बड़े-बड़े होटलों, रेस्टोरेंटों में ही नहीं शादी-पार्टियों में खाना बनाने वाला कुक किस जाति का है, यह बिना जाने लोग उसके हाथ से बने व्यंजनों का आनंद लेते हैं। दूसरों के उदाहरणों से हटकर स्वयं के जीवन की एक घटना का उल्लेख करना चाहूंगा। लगभग तीन दशक पूर्व अचानक एक क्षेत्र से गुजरते हुए एक युवक ने अभिवादन करते हुए याद दिलाया कि वह मेरा छात्र रह चुका है। उसका घर सामने ही था। भयंकर गर्मी के कारण मुझे तथा मेरे साथियों को प्यास लगी थी। मैंने उसके घर चलकर पानी मांगा। लेकिन उसकी माँ ने यह कहते हुए पानी देने से संकोच किया कि वे सफाई कर्मचारी परिवार से हैं। उसने अपने बेटे को बाजार से बोतलबंद पेय लाने के लिए कहा लेकिन हमने इसका प्रतिवाद करते हुए उनके गिलास से घड़े का पानी पीना स्वीकार किया। ऐसा कर हमने कोई क्रांतिकारी काम नहीं किया बल्कि अपने कर्तव्य का ही पालन किया था। ऐसे अनेक अवसर केवल मेरे ही नहीं आप सबके जीवन में भी हो सकते हैं जो रूढ़ियों की जड़ता के विरूद्ध आपका प्रयास रहा होगा। अब प्रश्न यह है कि ऐसे प्रयास बहुत प्रभावी क्यों नहीं हो पाते। कारण भी स्पष्ट है वोट बैंक सहित कुछ ऐसे तत्व है जो इस जड़ता को बरकरार रखना चाहते हैं। इसलिए मानसिक विकृति बन चुकी हमारी श्रेष्ठता ग्रन्थी बार-बार उभारी जाती है। कभी गुजरात तो कभी उत्तरप्रदेश, कभी बिहार तो कभी पंजाब, कभी कर्नाटक तो कभी आन्ध्रा। आश्चर्य यह भी है ऐसा होने पर खूब शोर कर वोटो की फसल काटने वाले भी यथास्थिति बनाये रखने का प्रयास करते है। अगर ऐसा न होता तो देश के सबसे बड़े प्रदेश में बदलाव की बड़ी-बड़ी बाते करके अनेक बार सत्ता में आने वाले स्थिति को बदल क्यों नही पाये। शायद उनके लिए खुद का और उनके निकटस्थ व्यक्तियों का साधन एवं शक्ति संपन्न हो जाना ही समानता का पर्याय है।

बदलते दौर में जरूरत है हम स्वयं की सोच को बदलते हुए राजनीति के चेहरे और चाल को समझे क्योंकि इससे किसी सामाजिक परिवर्तन असंभव है। वर्तमान लोकतांत्रिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए हमें सच्चे हृदय से यह स्वीकार करना चाहिए कि जिस प्रकार जन्म लेने से ही राजा नहीं होता। राजा बनने के लिए उसे कुछ ऐसे कर्म करने पड़ते हैं जो बहुमत का दिला सके। ठीक उसी प्रकार जन्म से ही कोई महान नहीं हो सकता। यदि कोई ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर भी सामाजिक मर्यादा का निर्वहन नहीं करता है तो वह क्षूद्र है और तथाकथित क्षूद्र परिवार में जन्म लेकर भी अपने विचार और कर्म की महानता के कारण वह ब्राह्मण ही है। बाबा साहब अम्बेडकर सहित ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने है।

धार्मिक संतों को इस संबंध में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। आर्यसमाज तथा सिक्ख समाज ने इस संबंध में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। यह विशेष रूप से स्मरणीय है कि केवल भारत ही नहीं विदेशों में भी गुरुघरों में धार्मिक कार्यों का निष्पादन समाज के उपेक्षित वर्ग के लोग करते है। गुरु के लंगर में जाति-धर्म का कोई भेद नहीं। ग्रन्थी, पाठी को सम्मान देना भारत की उस परम्परा का सम्मान है जिसकी राह हम जाने-अनजाने भटक चुके हैं। भटकना इतना बुरा नहीं जितना बुरा है

शेष पृष्ठ 22 पर....

समय के साथ कदमताल करता संघ

-लोकेन्द्र सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतिवर्ष विजया दशमी पर पथ संचलन (परेड) निकालता है। संचलन में हजारों स्वयंसेवक एक साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते जाते हैं। संचलन में सब कदम मिलाकर चल सकें, इसके लिए संघ स्थान (जहाँ शाखा लगती है) पर स्वयंसेवकों को 'कदमताल' का अभ्यास कराया जाता है। स्वयंसेवकों के लिए इस कदमताल का संदेश है कि हमें सबके साथ चलना है और सबको साथ लेकर चलना है। संघ की गणवेश में बदलाव का मूल भाव भी 'सबको साथ लाने के लिए समयानुकूल परिर्वतन' है। हालांकि, विरोधियों ने इसमें भी संघ निंदा का प्रसंग खोज लिया। आलोचक कह रहे हैं कि संघ ने 90 साल बाद 'चोला' बदल लिया। संघ के ज्यादातर आलोचक विटामिन 'ए' की कमी से होने वाले रोग 'रतौंधी' का शिकार हैं। इस रोग से पीडित व्यक्ति को रात में कम दिखाई देता है, लेकिन इन आलोचकों को दिन में भी आरएसएस समझ नहीं आता है। इसलिए वे संघ की प्रत्येक गतिविधि पर परिहास करते हैं। इनकी उलाहनाओं और छींटाकशी के बीच भी संघ अपनी मौज में जमाने के साथ आगे बढ़ता चला जा रहा है। संघ की गणवेश में 'नेकर' की जगह 'पैंट' समयानुकूल परिवर्तन है। हमें याद करना चाहिए कि अप्रैल-2016 में नागौर (राजस्थान) में हुई प्रतिनिधि सभा की बैठक के दौरान सरकार्यवाह सुरेश भैयाजी जोशी ने कहा था कि संघ वक्त के साथ चलने वाला संगठन है। भविष्य में भी हम वक्त के साथ बदलते रहेंगे। इससे पूर्व सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने कहा था कि संघ कोई रूढिवादी संगठन नहीं है। समय के अनुकूल हर चीज बदलती है। जो अपने अन्दर बदलाव नहीं करता है, वह समाप्त हो जाता है। संघ के शीर्ष पदाधिकारियों के इन बयानों से स्पष्ट है कि समाज के साथ चलने के लिए संघ ने गणवेश में परिवर्तन को स्वीकार किया है। यह परिवर्तन आगामी विजयादशमी के पर्व पर निकलने वाले 'पथ संचलन' में दिखाई देगा।

विजयादशमी के पर्व पर संघ के संचलन में शामिल होने वाले स्वयंसेवक नये गणवेश में दिखाई देंगे। नये गणवेश में खाकी नेकर की जगह भूरे रंग की पैंट को शामिल किया गया है। गणवेश में शामिल मोजे (जुराब) भी बदल गए हैं। जिनका ध्यान सिर्फ नेकर पर था, उन्हें यह जानकारी संभवत: नहीं होगी। हालांकि यह सवाल वाजिब है कि आखिर 90 साल बाद संघ को गणवेश में परिवर्तन करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? इसका जवाब तलाशा जाए, उससे पहले यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि संघ के गणवेश में यह पहला परिवर्तन नहीं है। 1925 से लेकर अब तक संघ अपने गणवेश में चार बड़े बदलाव कर चुका है। पहला बदलाव 1939 में किया गया। वर्ष 1939 में पहली बार गणवेश में सफेद रंग की पूरी बाँह की कमीज को शामिल किया गया, जबकि इससे पहले गणवेश पूरी तरह से खाकी थी। खाकी नेकर और खाकी कमीज। दूसरा बदलाव सन् 1973 में तब हुआ जब लॉन्ग बूट की जगह चमड़े या रेक्सीन के सामान्य काले रंग के जूते शामिल किए गए। तीसरा बदलाव वर्ष 2010 में हुआ। इस बार चमड़े के बेल्ट की जगह कैनवास बेल्ट को जगह दी गई और अब चौथी बार खाकी नेकर की जगह भूरे रंग की पैंट ने ले ली है। यह माना जा रहा है कि संघ की नेकर को लेकर विरोधी बहुत व्यंग्य कसते हैं। तथाकथित बुद्धिजीवी एक संगठन के कार्यकर्ताओं की गणवेश पर तंज कसते हुए उसे 'चीं' कहते हैं। यह वही बुद्धि विलासी लोग हैं, जो किसी अन्य के पहनावे पर सकारात्मक टिप्पणी पर भी मचल उठते हैं, लेकिन स्वयं किसी के पहनावे पर अमर्यादित टिप्पणी करते हुए आनंद की अनुभूति करते हैं। इन सब अप्रिय टिप्पणियों की परवाह न करते हुए संघ के लाखों स्वयंसेवक खाकी नेकर को 'अनुशासन' मानकर 'पर्व'

की तरह धारण करते रहे हैं। भोले-भाले स्वयंसेवकों की खाकी नेकर के प्रति गहरी आस्था और आत्मीयता है। उन्होंने खाकी नेकर को ही अपनी (संघ) पहचान बना लिया है। जबकि संघ की पहचान खाकी नेकर से नहीं बल्कि उसका आचार-विचार और व्यवहार है। सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले भी कहते हैं कि संघ से नेकर है, नेकर से संघ नहीं है। बहरहाल, नेकर को लेकर विरोधियों ने जिस तरह का वातावरण बनाया है, उसके आधार पर ऐसा माना जा रहा है कि अनेक युवा चाहकर भी संघ से नहीं जुड़ पाते हैं। शौक से फैशनेबल शॉर्टर्स पहनने वाले इन युवाओं को खाकी नेकर पहनने में असहजता की अनूभूति होती है। उनके संकोच को दूर करने के लिए ही संघ ने यह बदलाव किया है। यहाँ हमें ध्यान रखना चाहिए कि संघ की गणवेश से नेकर की विदाई इतनी आसानी से नहीं हुई है। पैंट को नेकर की जगह लेने में तकरीबन एक दशक का वक्त लगा है। इस विषय पर काफी लम्बा विचार मंथन चला था, उसके बाद ही पैंट को स्वीकार्यता मिली है। इसलिए गणवेश में परिवर्तन के लिए केवल 'उपहास' को कारण मानना हमारी भूल होगी। यदि संघ इस उपहास की परवाह करता, तब नेकर की जगह पैंट को आने में 90 साल का वक्त नहीं लगता।

गणवेश में परिवर्तन की घोषणा इसी साल अप्रैल में प्रतिनिधि सभा ने कर दी थी। चूँकि संघ का विस्तार समूचे देश में नगर-नगर, गाँव-गाँव में है। इसलिए सभी स्वयंसेवकों तक गणवेश परिवर्तन का संदेश और उन तक नया गणवेश पहुँचाने के लिए छह माह तक का समय लगने का अनुमान व्यक्त किया गया था। संघ की देशभर में लगभग 50 हजार शाखाएं हैं। इन शाखाओं से जुड़े स्वयंसेवकों की संख्या लाखों में है। लाखों स्वयंसेवकों के लिए गणवेश तैयार करने में समय लगना ही था। आरएसएस ने संकेत दिए थे कि 11 अक्टूबर, 2016 को विजयादशमी के पर्व पर निकलने वाले पथ संचलन में सभी स्वयंसेवक भूरे रंग की पैंट पहनकर शामिल होंगे। विजयादशमी पर देशभर में निकलने वाले पथ संचलनों में संघ के स्वयंसेवक नये गणवेश में दिखें, इसके लिए सभी प्रांतों के जिले-नगर-ग्राम में व्यापक संपर्क अभियान चलाया जा रहा है। स्वयंसेवकों से संपर्क कर उन्हें नये गणवेश लेने के लिए आग्रह किया जा रहा है। नागपुर स्थित संघ मुख्यालय पर नये गणवेश की आवक और बिक्री शुरू हो गई है। यहाँ से अन्य प्रांतों के लिए संघ का गणवेश भेजा जा रहा है। गौरतलब है कि विजयादशमी के दिन 1925 में संघ की स्थापना हुई थी। विजयादशमी पर्व संघ के प्रमुख छह उत्सवों में से एक है। इस दिन नागपुर स्थित रेशमबाग में संघ का बड़ा कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम में स्वयंसेवकों के बीच सरसंघचालक के विशेष उद्बोधन पर न केवल संघ के कार्यकर्ताओं का बल्कि दुनिया के तमाम लोगों का ध्यान रहता है। संभवत: यही कारण है कि संघ ने गणवेश में अब तक के सबसे बड़े बदलाव के प्रकटीकरण के लिए विजयादशमी के कार्यक्रम को चुना गया है।

(लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अध्येता हैं।)

.....पृष्ठ 20 का शेष

भटकाव पर गर्व करना। भटकाव यदि परम्परा बन जाये तो समाज का गौरव नष्ट होना तय है। हमें हर प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर विचार करना चाहिए कि सदियों रही गुलामी का कारण कहीं भटकाव पर गर्व करने वाली हमारी ग्रन्थी ही तो नहीं है? क्या यह सत्य नहीं कि इसी भटकाव का शिकार हमारा अपना ही समाज हुआ जिसने असमानता को 'धर्म' बताया तो अधर्मियों ने असमानता के शिकार हमारे ही भाईयों को समानता का स्वप्न दिखाकर धर्मान्तरण का जाल बिछाया। काश! हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को व्यवहार रूप में ला पाते। काश! हम 'हिंदव: सोदरा: सर्वे' को असफल बनाने वालों के इरादों को असफल बनाने के लिए सजग रहते।

जो हुआ सो हुआ। बीती ताही बिसार ले और आगे की सुधि लेय। समझदार वह होता है जो अतीत से सबक लेकर वर्तमान को सुधारता है और शानदार भविष्य की नींव रखता है। हम सभी को अपने आपसे पूछना चाहिए कि आखिर हम अपनी भावी पीढ़ी को कैसा भारत सौंपना चाहते हैं? क्या बंटा हुआ, लूजपूंज अथवा एकता की नींव पर खड़ा तेजस्वी भारत! ❑

हिंदवी स्वराज्य संकल्प

आगरा। लाल किले पर शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर हिन्दू स्वराज्य का संकल्प शिवाजी महाराज ने अपने नेतृत्व में पूर्ण किया यह बात विश्व हिन्दू परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री मनोज कुमार ने कही। उन्होंने भारत सरकार को सन्देश दिया 17 अगस्त 1666 में शिवाजी महाराज औरंगजेब को चकमा देकर यहाँ से निकलने में सफल हुए। शिवाजी महाराज ने भगवान श्री कृष्ण की नीतियों का अनुसरण किया ''शठे शाठ्यम'' जैसे को तैसा, शिवाजी महाराज की दो नीति अगर भारत की राजसत्ता पर बैठने वाले लोग अनुसरण करें (1) शिवाजी महाराज का गुप्तचर विभाग (2) औरंगजेब को उसी की भाषा में समझाया। आज पाकिस्तान को शिवाजी महाराज की नीति के अन्तर्गत जवाब देना चाहिये। शिवाजी महाराज ने अपने जीवन काल में गाय व बहिन, बेटियों की रक्षा का संकल्प दिया था। आज भारत की राज सत्ता शिवाजी का अनुसरण करे तो विश्व भारत का नेतृत्व सहज स्वीकार करेगा। हमारी संस्कृति हमारी नौजवानी पर गर्व होना चाहिये जिसको शिवाजी महाराज ने अपने जीवन काल में स्थापित कर चरितार्थ किया।

शिवाजी महाराज ने बाल्यकाल में ही छोटे बालकों को फौज बनाकर मुगलों पर धावा बोलने की रणनीति, माता जीजाबाई से रामायण, विश्वामित्र की कहानियों से धर्मस्थलों को मुक्त कराने का संकल्प उन्होंने अपने बाल्यकाल जीवन से ही सन्देश दिया। आज भारत सरकार व राज्य सरकार धर्म स्थलों की सुरक्षा, गायों की सुरक्षा, बहिन-बेटियों की रक्षा संकल्प लेकर शिवाजी महाराज से उनकी रणनीति अनुसरण करने की आवश्यकता है।

11 पैरा मिलिट्री के जवानों ने कार्यक्रम रखा व शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर सैकड़ों बजरंग दल व विहिप कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया।

कार्यक्रम में स्वतंत्रता सेनानी चिमनलाल जी, व्यापार संघ, कालिन्दी विहार पेठा समिति, सर्राफा कमेटी, कपड़ा बाजार समिति, ताज स्वर्णकार, अशवंशज समूह, महाराष्ट्र मंडल, प्रदेश विहिप कार्याध्यक्ष विनोद गोयल, उपाध्यक्ष सुनील पराशर, महानगर अध्यक्ष दीपक अग्रवाल, विहिप धर्मप्रसार सुरेन्द्र चौधरी, बजरंग दल महानगर संयोजक बन्टी ठाकुर, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुभाष ढल, विहिप के राजेन्द्र गर्ग, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष रामकुमार शर्मा, बजरंग दल धर्मेन्द्र राजपूत, मदन वर्मा, राकेश त्यागी, अनूप वर्मा, रवि दुबे, एस. पी. सिंह, सुभाष जी वोहरा, ललित दक्ष, नागेन्द्र झा, नितिन बहल समेत सैकड़ों जाति बिरादरी राजनीतिक पार्टी के लोग शामिल रहे।

जारीकर्ता

राजीव शर्मा

महानगर मंत्री, विहिप मो.-8909519995

दिल्ली की प्रमुख सड़कों पर पढ़ा जायेगा महाचालीसा

-अखण्ड भारत मोर्चा

(प्रत्येक शुक्रवार सड़को को रोक कर नमाज पढने का मामला)

अखण्ड भारत मोर्चा दिल्ली प्रदेश की ओर से पंचेश्वर शिव मन्दिर, विकास मार्ग, लक्ष्मी नगर में मन्दिर के सामने तीसरी बार सड़क पर महाचालीसा पढ़ा गया। चालीसा में उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संदीप आहूजा ने कहा कि हमारे बार-बार चेताने के बावजूद भी प्रशासन की निंद्रा नहीं टूट रही है अपनी जायज माँग मनवाने के लिए भी हमें लगता है कि संघर्ष और अधिक तेज करना पड़ेगा। श्री आहूजा ने कहा कि प्रत्येक सप्ताह सड़क रोक कर नमाज पढ़ना कानूनन भी गलत है जिसे प्रशासन न रोक कर दो समुदायों मे वैमन्सय फैलाने का काम कर रहा है। यदि हिन्दू समाज और अधिक आक्रमक होकर सड़कों पर महाचालीसा एवं महाआरती प्रत्येक सप्ताह पढ़ने लगे तो प्रशासन के लिए दुशवारियां ओर अधिक बढ़ जायेगी। श्री आहूजा का कहना है कि कोई त्योहार (रमजान, मोहरम, ईद, दीवाली, होली, रामनवमी, महावीर जयंती, गुरुपुर्व, क्रिसमिस आदि) हो तो समाज अव्यवस्था को सहन कर लेता है परन्तु प्रत्येक शुक्रवार को सड़क रोक कर अपनी ओर ध्यान आकर्षित

शेष पृष्ठ 24 पर.....

डॉ स्वामी मुकुन्ददास जी महाकोशल प्रांत के संयोजक बने

दिनांक 29 अगस्त 2016 को स्वामी रामदास जी महाराज के आश्रम ग्वारीघाट जबलपुर में संत मार्गदर्शक मंडल की बैठक संपन्न हुई। जिसमें प्रांत के बड़ी मात्रा में संत शामिल हुये। बैठक में सामाजिक समरसता, गौरक्षा, हिन्दू मानबिन्दुओं की रक्षा जैसे विषय पर विस्तार से संतों ने चर्चा की प्रस्तावना प्रांत मंत्री श्री गोविन्द शेंडे द्वारा रखी गई। जिस पर संतो ने तीन सत्रों में अपने विचार खुलकर रखे व अपने-अपने कार्य क्षेत्र में उक्त विषयों पर कार्य करने की बात कही।

बैठक का उदघाटन जगत गुरू राघवदेवाचार्य जी महाराज, प्रांत संयोजक रमेशमणी जी महाराज, केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य पूज्य संत दीव्यजीवन दास जी महाराज, रामदास जी महाराज के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन व मंत्रोचार के मध्य किया गया।

चर्चा सत्र में अ.भा. साध्वी परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष साध्वी विभानन्द गिरि जी ने कुंभ के अवसर पर विचार कुंभ में लिये गये निर्णयों की जानकारी देते हुये सभी से आग्रह किया की विश्व हिन्दू परिषद द्वारा किये जाने वाले कार्यों में सहयोग प्रदान करें।

दूसरे सत्र में सामाजिक समरसता पर चर्चा में सभी संत समाज में एकरूकता लाने व भेदभाव समाप्त करने के पक्ष में रहें व सभी ने संकल्प लिया कि वे इसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार कर अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से समरसता हेतु प्रयास करेंगे।

समापन सत्र में जगत गुरू रामरंगी द्वाराचार्य, पूज्य श्यामदेवाचार्य जी महाराज ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन में हिन्दू समाज पर मंडरा रहे खतरों की और ध्यान आकर्षित किया व सभी संतों को समाज का मार्ग दर्शन करने का आग्रह किया। सभी संतों को सक्रिय करने की विश्व हिन्दू परिषद की भूमिका रामजन्म भूमि का विषय गौरक्षा का विषय भी उन्होंने रखा व कहा कि गाय को राष्ट्रीय पशु नहीं बल्कि राष्ट्र माता घोषित किया जावे व देश में पूर्ण गौवध प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये।

बैठक के अंत में प्रांत मंत्री श्री गोविन्द शेंडे ने प्रांत मार्गदर्शक मंडल का पुर्नगणन किया जिसमें गुप्तेश्वर पीठाधीश्वर डॉ मुकुन्ददास जी महाराज को प्रांत का संयोजक, पूज्य कालीनन्द जी महाराज, पूज्य नागेन्द्र ब्रचारी, पूज्य सुदर्शन दास जी महाराज को सह संयोजक एवं युवा संत चिंतन वर्ग हेतु स्वामी बालकदास जी को संयोजक के रूप में घोषित किया। बैठक में कुल 60 प्रमुख संत उपस्थित थे। बैठक का संचालन प्रांत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख श्री मुन्ना पाण्डे जी ने किया। प्रांत उपाध्यक्ष श्री योगेश जी तिवारी एवं क्षेत्रीय सह धर्माचार्य संपर्क प्रमुख श्री दामोदर जी नामदेव बैठक में पूरे समय उपस्थित रहे।

प्रेषक : **मुन्ना पाण्डे**
प्रांत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख, महाकोशल प्रांत

.....पृष्ठ 23 का शेष

करवाने का ढोंग अब समाज सहन नही कर सकता है। महाचालीसा मे प्रमुख रुप से मीडिया प्रमुख श्री प्रवेश चौधरी, मुख्य कानूनी सलाहकार श्री राहुलराज मलिक, उपाध्यक्ष श्री कमल सिंह, श्री वीरेन्द्र, अखण्ड भारत मोर्चा दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री भारत बत्रा, महामंत्री श्री प्रेम गुप्ता, त्रिलोक पुरी अध्यक्ष श्री विकास गर्ग, श्री राजेश सिंह, श्री योगेश गोदिया, श्री वेद प्रकाश, श्री अजय गुप्ता, श्री ईश्वर, श्री केशव शर्मा, हिन्दू हेल्प लाईन के श्री विनोद शर्मा, विहिप के राष्ट्रप्रकाश, बजरंग दल जिला संयोजक श्री उमेश अग्रवाल, अभामो महिला विंग पांडव नगर से श्रीमती आरती सिंह, अभामो महिला विंग मंडावली श्रीमती सुनीता देवी से आदि सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

महाचालीसा में महिलाओं ने भी बढ़-चढ कर हिस्सा लिया। कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर होने वाली नमाज बन्द होने के नारे भी लगाये ओर जाम हुऐ ट्रैफिक में जन जागरण के लिए हेंडबिल भी बांटे।

-**राजश्री आहूजा** (प्रचारमंत्री) 9711811072

सनातन संस्कृति की पर्याय - श्रीकृष्ण-जन्मभूमि

ब्रज की धरती धर्म की धरती है। कर्म का प्रत्येक चरण यहाँ धर्म के संकेतों पर चला है। अपने को साधते हुए उसने विश्व को साधना कभी नहीं भूला। भूले भी क्यों, वह उसी का तो व्याप है। इसीलिये 'विश्व का कल्याण हो' यही सदैव से हमारा उद्घोष रहा। कृण्वन्तो विश्वमार्यम' लक्ष्य रहा। संस्कृति का प्रकाश प्रत्येक को सम्हाले और सभ्यता का उत्कर्ष प्रत्येक को सजाये; सम्पन्नता की देवी प्रत्येक कुटिया को सरसाये और सुख शान्ति की देवी प्रत्येक को संतृप्त करे, यह हम भारतीयों की प्रभु से कामना ही नहीं इस कामना की पूर्ति के लिये सतत साधना का इतिहास साक्षी रहा है। भारत की संस्कृति विश्व की संस्कृति है और भारत का धर्म विश्व का धर्म है और ब्रज की संस्कृति उसका पर्याय! इसी को मानव संस्कृति और मानव धर्म कहते हैं। विश्व को गीता का ज्ञान देने वाला पूर्णावतार, सर्व समर्थ जिसे भगवान कहा गया है श्रीकृष्ण ने भी इसी ब्रज वसुन्धरा को अपनी जन्मस्थली के उपयुक्त समझा और इस धरती को अत्यन्त सार्थक नाम मिला 'भारत'।

दुर्भाग्य ने विश्व के मार्गदर्शक को ही अपने मार्ग से दिग्भ्रमित कर दिया। स्वार्थ साधना में लिप्त हुआ भारत, अहं में डूबा रहा भारत, भोग में खो सा गया भारत कि जिसके चलते प्रत्येक व्यक्ति वीर होते हुये भी, समाज के नाते अशक्त बना। बिखरे हुये समाज पर, केवल अपने लिये मर मिटने वाले वीरों पर, विदेशी लुटेरों और आक्रमणकारियों के वार पर वार होते रहे। प्रतिरोध हुआ, आक्रान्ताओं को भगाया भी, परन्तु समग्र राष्ट्र एक होकर शक्ति बन खड़ा नहीं हुआ। इसी का लाभ उठाकर मुगलों ने यहाँ आकर राजनैतिक सत्ता ही नहीं संभाली, समाज की धड़कन को भी मुठ्ठी में कसने का राक्षसी प्रयास किया। कत्लेआम के लिए उठी तलवार ने हिन्दुओं के 80 मन जनेऊ तक तौल दिये। बहनों व बेटियों के लिए एक मीना बाजार ही नहीं, हर घर और हर आंगन मीना बाजार बना दिया गया। घर में आने वाली बहू घर की नहीं, मीना बाजार की होकर रह गयी। धर्म परिवर्तन का दुधारा चला, सत्ता और पैसे की मार, इससे न मरा तो गर्दन पर सीधा तलवार का वार! देवालय टूटे, देव प्रतिमायें टूटीं। भगवद् चर्चा बन्द हुई। हिन्दुओं के चेहरे पीले पड़ गये, चहुँ ओर उदासी छा गई।

इस उदासी और पीलेपन को चीरती हुई शिवा की 'भवानी' और राणा का भाला चमक उठा। समाज जगा, अपने पैरों पर खड़ा हो गया और ललकार उठा 'सत्ता हारी है, समाज नहीं हारा'। सूर ने जीवन के स्वर अलापे, तुलसी ने जीने की कला दी, मीरा ने रस घोला, रसखान और रहीम भी बह निकले। सम्पूर्ण समाज धर्म और पंथ की सीमाओं को भूलकर भारत राम और कृष्ण की भक्ति में झूम उठा। 'रावण-वध' और 'कंस-वध' ने घर-घर में खेलने वाले 'राम' और 'कृष्ण' को एक और वध के लिये तैयार कर दिया। स्वामी विवेकानन्द ने आह्वान किया, ऋषि दयानन्द ने दिशा दी और समाज स्वतंत्रता संग्राम के लिये सन्नद्ध हो गया। यह स्वातंत्र्य युद्ध नहीं, राष्ट्र साधना थी, लोक साधना थी।

विदेशी सत्ता छोड़कर चले गये। हमने सत्ता सम्हाली, लेकिन 'स्व' तंत्रता हमसे रूठी रही। 'तंत्र' विदेशी, 'मंत्र' विदेशी, षड्यंत्र विदेशी, फिर भला 'स्व' तंत्र कैसे? 11वीं सदी के हमलावर, 1947 तक इस्लामिस्तान बना न सके; परन्तु अपनी कायराना व सत्तालोलुप राजनीति के कारण पाकिस्तान बनाने में सफल हो ही गये। इस घिनौनी राजनीति ने आजादी का सेहरा अपने सिर बाँधा और आजादी के लिए मर मिटने वालों को अन्धकार में धकेल दिया।

हिन्दू संस्कृति व हिन्दुस्तान के लिए तिल-तिल गल जाने वालों को विस्मृत कर दिया गया। महामना मदनमोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, वीर सावरकर, सरदार पटेल, डॉ. हेडगेवार, पुरुषोत्तमदास टण्डन, डॉ. सम्पूर्णानन्द जैसे लोगों को कौन याद करता है? विदेशियों के शासन में अत्याचार हुए सो हुए किन्तु 69 साल के अपने शासन में जो अत्याचार के गहरे घाव लगे हैं, उनकी पीड़ा अत्यन्त कष्टदायी है। अयोध्या में बाबर ने श्रीराम मन्दिर तोड़ा, औरंगजेब ने मथुरा में श्रीकेशवदेव मन्दिर व काशी में विश्वनाथ मन्दिर तोड़ा, किन्तु आज तो हमारे अपनों के

सामने ही मन्दिर तोड़े जा रहे हैं। माताओं, बहनों के साथ बलात्कार, उनके वक्ष व जंघाओं पर 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' के नारे, नित्य के अपहरण, ये धर्मपरिवर्तन, ये हत्याएं और गौ हत्याएं, किसे पुकारें? कौन तैयार है, सुनने को? यह जलता हुआ तिरंगा, यह फटता हुआ संविधान, भारत माँ को डायन कहने वालों की सत्ता, 'मुस्लिम इण्डिया' का ख्वाब, दस मिनट में हिन्दुओं को सबक सिखा देने का ऐलान, गौ हत्या निषेध कानून को चुनौती; किसको ललकारता है, किसको है ये चुनौती? क्या उनको जो एक शाहबानो के लिए संविधान बदल देते हैं, क्या उनको जो संस्कृत भाषा को हटा उर्दू को प्रदेश की भाषा घोषित करते हैं, क्या उनको जो देश में विदेश का कानून चलाते रहने का संकल्प लेते हैं, क्या उनको जो इमाम ओर औवैसी के पैरों पर नाक रगड़ते हैं। नहीं! नहीं!! नहीं!!! यह चुनौती है उनको जो भारत माँ के लाड़ले बेटे हैं, जो राम और कृष्ण के वंशज हैं, जो राणा और शिवा के रक्त हैं, जो राष्ट्र साधना में सतत् रत हैं।

मथुरा की धरती, यह ब्रज वसुन्धरा उन्हें पुकारती है। एक सहस्र वर्ष में कई-कई बार मन्दिर टूटा और बार-बार फिर खड़ा हुआ। यही है चिरंतनता और यही है, सनातन होने का साक्ष्य! आवश्यकता है अपने दायित्व को जानने की, अपने अधिकार को पहिचानने की और अधूरी साधना को पूर्णता तक पहुँचाने की।

मथुरा की धरती तो कृष्ण के प्राकट्य व उनके द्वारा किये गये गौचारण से पवित्र बनी है। इसका कण-कण हमारे लिए संजीवनी शक्ति संजोये है। उस शक्ति पुंज को अनुभव करना, उससे परिपूर्ण होकर कर्म क्षेत्र में कूद पड़ना, उस शक्ति को जन-जन तक पहुँचाना और जन सामान्य को सामर्थ्यवान बनाकर उसे अपने पैरों पर खड़ाकर उद्घोष करवाना 'न दैन्यं न पलायनम्' यही हमारा धर्म है ।

-विजय बहादुर सिंह
प्रान्त कार्यालय प्रमुख
हिन्दू जागरण मंच,
ब्रज प्रान्त, मथुरा

❑

.....पृष्ठ 6 का शेष

है। जीवन की छोटी-छोटी सारगर्भ बातें तुम्हीं उसे समझाओगे।'

अमेरिका से दास प्रथा समाप्त करने वाले महान सामाजिक योद्धा अब्राहिम लिंकन को नमन कर जब पलटता हूँ तो उनका यह प्रसिद्ध पत्र आज दुनिया भर के अनेक विद्यालयों के प्रांगण में टंगा या रंगा दिखाई देता है पर ऐसे शिक्षक, अभिभावक ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलते जो लिंकन से सहमत हों। यदि हम अपने बच्चे को आज नहीं सिखा सके तो कल बहुत देर हो चुकी होगी। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थॉमस ए हैरिस अपनी बेस्ट सेलिंग बुक 'आई एम ओके यू आर ओके' में लिखते है -'मनोजन्य रोगों का मूलाधार बच्चों की गलत शिक्षा एवं लर्निंग में ही है। मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्धारण बारह वर्ष तक हो जाता है, बाद में तो वह मात्र टेप को रिप्ले करता है।'

जय शिक्षा! जय शिक्षक!! ❑

मानसिक पतन

उपहास और उलाहना समाज में साथ दौड़ते रहते हैं,
जैसे कोई पतंगा भोजन की तलाश में भागता है।

एक चौराहे के मानिंद मानता है समग्र शक्ति को,
जहाँ कल्पित जिंदगी का नाम गुजर भर जाना है।

शहर की भाषा में आधी आबादी एक गहरा तंज है,
आदमी स्त्री को गहरे चिंतन में भी शक से देखता है।

इस शहर की मानसिक आत्मा को क्या हो गया है,
हर रंग में स्त्री को केवल उलाहना से ही नवाजता है।

हर लिबास में नारी उसे प्रेयसी ही क्यूँ नजर आती है?
शायद माँ का आँचल उसके मानस से उतर गया है।

शायद सभ्यताओं का यह शहर अब खोखला हो गया है,
दृष्टा में वाद-संवाद की भाषा भी कामुक-सी हो गई है।

दैहिक लाश को ही जीवन का अर्थ मानने वाला शहर,
चकाचौंध में तम का व्याकरण भी विचलित है 'अवि',

भाषा के आवरण में भी शहर के संस्कार मर चुके हैं,
तभी तो नारी दिवालिये शहर में शोषण से पोषित है।

-अर्पण जैन 'अविचल'